डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 19 | अंक 28 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | रविवार 10 नवम्बर 2024 | मूल्य 2 रुपया

आधा दर्जन से ज्यादा नर्सिंग कालेजों पर लग सकते हैं ताले?

नियमों को ताक पर रखकर कर रहे थे संचालन, सीबीआई जांच में सामने आया सच

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर- नीमच - रतलाम सहित प्रदेश के 700 नर्सिंग कॉलेजों में से 500 को संचालन योग्य नहीं माना गया है। सिर्फ 200 नर्सिंग कॉलेजों को ही संचालन के योग्य माना गया है। पहले हुई सीबीआई जांच में 169 कॉलेजों को पात्र माना गया था। इस जांच पर सवाल उठे तो हाईकोर्ट के निर्देश पर दोबारा जांच की गई। इसमें 87 कॉलेज ही संचालन के योग्य पाए गए। इस तरह करीब 150 से अधिक नर्सिंग कॉलेज पात्र पाए गए थे। सीबीआई की प्रथम जांच रिपोर्ट में प्रदेश के 73 नर्सिंग कॉलेजों में कमियां पाई गई थी। इनमें से 26 कॉलेजों ने अपनी कमियों को पूरा कर लिया है। जबकि 4 कॉलेजों ने सीबीआई जांच के डर से खुद ही संचालन से मना कर दिया है। कुछ मामलों को फिलहाल होल्ड पर रखा गया है। मंदसौर, नीमच व रतलाम जिले के भी आधा दर्जन से ज्यादा कालेजो पर ताला लग सकते है।

जबलपुर हाईकोर्ट की मुख्यपीठ ने ग्वालियर बेंच में लंबित नर्सिंग कॉलेजों से संबंधित 10 मामलों को अब जबलपुर मुख्यपीठ में ट्रांसफर करने का आदेश दिया है। याचिकाकर्ता विशाल बघेल ने बताया कि ये मामले सत्र 2022-23 में नर्सिंग कॉलेजों के संबंध में काउंसिल के निर्णय के खिलाफ दायर की गई अपीलों से जुड़े हैं। तत्कालीन डायरेक्टर ऑफ मेडिकल एजुकेशन (डीएमई) ने सत्र खत्म होने के बाद भी कॉलेजों के पक्ष में अतिरिक्त सीटों की मान्यता देने का आदेश दिया था। हालांकि, प्रशासकों ने सत्र समाप्त होने के कारण इस आदेश को लागू नहीं किया, जिसके बाद संबंधित कॉलेजों ने हाईकोर्ट का रुख किया था।

चीता प्रोजेक्ट: तेंदुआ रूपी खतरा टालने का प्रयास

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। गांधी सागर में चीता प्रोजेक्ट के दौरान तेंदुओं की समस्या सामने आई थी। गांधी सागर के तेंदुए यहां लाए जाने वाले चीतों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। यहीं कारण है कि इनको अन्य जगह शिफ्टिंग के प्रयास किए जा रहे हैं। अब तक 11 तेंदुए शिफ्ट किए जा चुके हैं। जिसमें एक की मौत की खबर आई है।

ढाई महीने के अंदर गांधी सागर से तीन तेंदुओं को कॉलर आईडी लगाकर खंडवा की चांदगढ़ रेंज में छोड़ा गया था। इनमें से एक तेंदुए की लोकेशन 15 अक्टूबर से एक ही जगह देवास जिले की सतवास रेंज में आ रही थी। इस पर गांधी सागर से देवास वन मंडलाधिकारी 'डीएफओ' को सूचना दी गई। डीएफओ के निर्देश पर पर टीम ने घने जंगल में जाकर देखा तो तेंदुआ मृत अवस्था में मिला। वन एसडीओ एसएल यादव कन्नौद ने बताया 28 अक्टूबर की शाम को तेंदुए का शव मिला और 29 को डॉक्टरों की टीम ने निरीक्षण किया। डीएफओ की उपस्थिति में उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया। चांदगढ़ रेंज में 3 तेंदुए छोड़े हैं, वह भी इस तरफ आना-जाना करते हैं। तेंदुए एक दिन में 15 से 20 किमी जंगल में विचरण करते हैं। देवास में भी तेंदुओं को बसाने के लिए पर्याप्त जगह है। लेकिन, अभी गांधी सागर से देवास के लिए तेंदुए नहीं भेजे गए।

वन एसडीओ एसके शुक्ला ने बताया कि गांधी सागर से अभी जिले के लिए तेंदूएं नहीं आए हैं। इसकी जानकारी लिखित में आएगी, हो सकता है आने वाले समय में आ जाए। देवास वन विभाग की पुंजापुरा, कांटाफोड़ और रतनपुरा सहित एक अन्य रेंज ओंकारेश्वर राष्ट्रीय उद्यान से जुड़ी है। इस रेंज में 10-12 किमी तक एक भी गांव नहीं हैं, पूरा जंगल ही जंगल है। यह जंगल क्षेत्र तेंदुओं को बसाने के लिए अच्छा है।

अब तक 11 तेंदुओं को किया शिफ्ट, एक की मौत

परिक्षेत्र में 200 से अधिक तेंदुए...

वन एसडीओ शुक्ला ने बताया वन विभाग की सभी रेंज में तेंदुए विचरण करते हैं। जिले में 200 से अधिक तेंदुओं की संख्या है, जो हर साल बढ़ती जा रही है। इनकी सुरक्षा के लिए वन विभाग का अमला हर समय पेट्रोलिंग करता है। शंकरगढ़ की पहाड़ियों में भी तेंदुए विचरण करते हैं।

इनका कहना...

गांधी सागर से फोन आने पर पता चला कि अपने यहां तेंदुआ आया है। सतवास रेंज के घने जंगल में जाने के लिए टीम ने पहले पगडंडी रास्ता बनाया, उसके बाद हम ढाई किमी पैदल चलकर पहुंचे। डॉक्टरों ने देखकर प्रथम दृष्टया बताया कि इसका किसी से संघर्ष हुआ या उम्र 10 साल से अधिक है या भूखा होने से मौत हुई है। इसकी खाल, नाखून और दांत घटना स्थल पर मिले हैं। विसरा जांच के लिए भेज दिया और कॉलर आइडी जब्ती में ले ली है।

पीके मिश्रा, डीएफओ, देवास।

अभयारण्य से 11 तेंदुए शिफ्ट किए हैं। वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया ने जो स्थान सुझाए हैं, जहां तेंदुएं के लिए कम घनत्व है, वहीं पर रोटेशनवार शिफ्टिंग प्रक्रिया जारी है। अभी तक 3 तेंदुए खंडवा, 1 ओंकारेश्वर, 1 नरसिंहगढ़, 3 सिवनी, 1 वन विहार भोपाल, 5 गांधी सागर के पश्चिमी व पूर्वी इलाके में छोड़े गए हैं। इनमें से 1 की मृत्यु देवास के सतवास रेंज में हो गई। विसरा रिपोर्ट आने पर मौत का खुलासा होगा।

संजय रायखेरे, डीएफओ, मंदसौर

दिन सामान्य, रातें होगी सर्द

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। वेस्टर्न डिस्टरबेंस के चलते नवंबर के आखरी सप्ताह में प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में बारिश हो सकती है। मंदसौर जिले में इसका असर नहीं रहेगा। मौसम खुला रहेगा। दिन वर्तमान की तरह सामान्य और रात में सर्दी का असर रहेगा। जिले में अधिकतम तापमान 31 डिग्री व न्यूनतम तापमान 18 डिग्री के आसपास बना हुआ है।

मौसम विज्ञान केंद्र भोपाल के सीनियर वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया कि बंगाल की खाडी में चल रही पूर्वी हवाएं प्रदेश में आती रहेंगी। इससे उत्तरी हवाएं नहीं आएंगी और ठंड का असर ज्यादा नहीं बढ़ेगा। कुछ शहरों में रात का टेम्प्रेचर सामान्य से एक से डेढ डिग्री तक अधिक रह सकता है। मौसम विभाग के अनुसार, दक्षिण-पश्चिम मानसून के समाप्त होने के बाद मौसम सामान्यत: शांत होता है, लेकिन आसमान बादलों से घिरा रहता है। वहीं, रात के पारे में गिरावट आने लगती है। उत्तर भारत में बर्फबारी होने के बाद पूरा मध्यप्रदेश ठिठुरने लगता है। हर साल नवंबर के दूसरे सप्ताह में उत्तर से ठंडी हवाएं आने लगती हैं। लेकिन, वर्तमान में बंगाल की खाडी में पूर्वी हवाओं का जोर है। ये हवाएं एमपी में आई तो उत्तरी हवाओं का जोर ज्यादा नहीं रहेगा। इससे तापमान में ज्यादा गिरावट होने की संभावना नहीं है।

खेत पर सोए किसान की हत्या

सुबह भाई पहुंचा तो चला पता, हाथ-पांव भी तोड़ दिए

रतलाम, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। जिले के गांव दिवेल में एक किसान अपने ही खेत पर शनिवार सुबह मृत अवस्था में मिला है। किसान के हाथ-पांव टूटे मिले हैं। आशंका जताई जा रही है कि किसी ने उसकी हत्या की है। हत्या की सूचना मिलने पर रतलाम से पुलिस अधिकारी डॉग स्क्वाड के साथ मौके पर पहुंचे।

यह वारदात सैलाना थाने की धामनोद चौकी के गांव दिवेल की है। मृतक का नाम हिम्मत सिंह पिता करण सिंह देवड़ा उम्र 47 साल निवासी दिवेल है। शनिवार सुबह मृतक के बड़े भाई कमल सिंह खेत पर गए तो इस वारदात का पता चला। कमलसिंह पास ही स्थित अपने खेत पर सोए थे। सुबह जब वह उठे और भाई के खेत की तरफ गए तो पता चला। इसके बाद उन्होंने परिजनों व ग्रामीणों को सूचना दी। बताया जा रहा है कि खेत की निगरानी के लिए कमल सिंह रात में खेत पर सोने गए थे।

हत्या की सूचना मिलते ही सैलाना थाना व धामनोद पुलिस चौकी से पुलिस बल मौके पर पहुंचा। इसके बाद रतलाम से एएसपी राकेश खाखा, सैलाना एसडीओपी नीलम बघेल, एफएसएल अधिकारी अतुल मित्तल पहुंचे। आसपास के क्षेत्र में डॉग स्क्वाड से भी सर्चिंग कराई जा रही है। मृतक के हाथ-पैर पूरी तरह से टूटे मिले है। ग्रामीणों के अनुसार हिम्मत सिंह अपने ही खेत पर सोते थे। वह जिस पलंग पर सोते थे, उसके पास ही नीचे शव मिला है। फिलहाल पुलिस जांच में जुटी है। पंचनामा बनाकर शव को पोस्टमार्टम के लिए रतलाम मेडिकल कॉलेज भेजा गया। जहां पीएम के बाद शव परिजनो के सुपुर्द किया गया।

बताया गया है कि मृतक अकेला रहता था। घटना स्थल के पास बीयर की बोतल मिली है। पुलिस को आशंका है कि कुछ लोग बैठ कर शराब पी रहे होंगे। मृतक ने मना किया होगा। इसी दौरान कुछ विवाद हुआ होगा। हालांकि अभी पीएम रिपोर्ट के बाद ही पूरे खुलासे की बात कही जा रही है। पुलिस कप्तान अमित कुमार ने बताया कि मृतक अकेला रहता था। प्राथमिक जांच में जमीनी विवाद से जुड़ा होकर हत्या होना प्रतीत हो रहा है। टीम जांच में लगी है।

तिलस्वा घाट पर गेस सिलेंडर से भरा ट्रक अनियंत्रित होकर खाया पलटी, ड्रायवर घायल

सिंगोली/मनासा, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। शनिवार को नसीराबाद से गेस सिलेंडर भरकर सिंगोली डिलीवरी देने आ रहा ट्रक करीबन शाम 5:00 बजे तिलस्वा घाट पर अनियंत्रित होकर घाट की गहरी खाई में गिर गया। जिससे खाई में चारों ओर गेस सिलेंडर बिखर गए। यह तो गनीमत रही की कोई बडी दुर्घटना घटित नहीं हुई। सूचना पर सिंगोली पुलिस एम्बुलेंस और फायर ब्रिगेड भी मौके पर पहुंचे, जहां से ट्रक में फंसे चालक को बाहर निकालकर घायल अवस्था में सिंगोली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां उसका प्राथमिक उपचार किया गया।

मिली जानकारी के अनुसार शनिवार को नसीराबाद स्थित गेस रिफलिंग प्लांट से 352 एचपी गेस कंपनी के गेस सिलेंडर भरकर ट्रक सिंगोली स्थित बसंत किचन सर्विस के गेस गोदाम पर गेस सिलेंडरों की सप्लाई देने के लिए निकला था लेकिन सिंगोली पहुंचने से पूर्व ही सिंगोली से आठ किलोमीटर दूर स्थित तिलस्वा घाट पर ब्रेक फेल होने के कारण अनियंत्रित होकर रेलिंग को तोडता हुआ गहरी खाई में गिर गया हालांकि खाई में गिरने से पूर्व चालक ने अनियंत्रित ट्रक को खाई में गिरने से बचाने के लिए घाट की दीवार पर टकराया लेकिन ढलान ज्यादा होने और अनियंत्रित होने के कारण वह सफल नहीं हो पाया और ट्रक गहरी खाई में गिर गया जिसमें चालक ताराचंद पिता कालूराम उम्र 34 वर्ष निवासी अजमेर राजस्थान घायल हो गया जिसे मौके पर पहुंची पुलिस और राहगीरों ने एंबुलेंस की सहायता से सिंगोली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया जहां पर चालक का स्वास्थ्य केंद्र पर मौजूद स्वास्थ्य कर्मियों ने प्राथमिक उपचार किया गया।

अतिशेष शिक्षकों की परेशानी सुनेगा विभाग

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। स्कूल शिक्षा विभाग एक बार और अतिशेष शिक्षकों की परेशानी सुनेगा। इसके लिए इन शिक्षकों को 12 नवंबर तक दावे-आपत्ति प्रस्तुत करने होंगे। जिनका निराकरण 19 नवंबर तक किया जाएगा। इस बार वे ही शिक्षक दावे-आपत्ति प्रस्तुत कर पाएंगे, जिनके तबादला आदेश 11 अक्टूबर के बाद जारी हुए हैं।

इन शिक्षकों ने आरोप लगाए थे कि उनकी आपत्ति सुने बगैर ही विभाग ने उनके तबादले कर दिए हैं। उन्हें दावे-आपत्ति प्रस्तुत करने का मौका भी नहीं मिला। इसके बाद विभाग ने इन शिक्षकों की आपत्ति सुनने का निर्णय लिया है। संचालक लोक शिक्षण केके द्विवेदी ने प्रक्रिया तय कर संभागीय संयुक्त संचालक लोक शिक्षण और सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देशों के अनुरूप कार्यवाही करने को कहा है।

कीमत से अधिक दर पर खाद बेचने पर दुकानदार राकेश जैन के विरुद्ध एफआईआर दर्ज

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। उपसंचालक कृषि कल्याण विभाग श्रीमती अनीता धाकड द्वारा बताया गया कि, फर्म न्यु हार्दिक फर्टीलाईजर्स सदर बाजार भावगढ के फर्म का निरीक्षण किया गया। निरिक्षण करने पर फर्म के गोदाम मे बिना ओ फार्म के उर्वरक भण्डारण होना पाया गया एवं कृषको को केश मेमो/क्रेडिट मेमो प्रदाय नही करना पाया गया। दुकानदार राकेश जैन द्वारा फर्म का संचालन नियमानुसार नही किया जाकर कालाबाजारी करना पाया गया। अत: उक्त कृत्य उर्वरक गुण नियंत्रण आदेश 1985 की धारा 3,5,8 कि किसी भी खण्ड / नियम का उलंघन पाया जाने से अपराध होना पाया। प्रोपाईटर राकैश जैन के विरुद्ध अपराध धारा उर्वरक गुण नियंत्रण आदेश 1985 की धारा 3(3)(1),5,8 तथा आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 3(7) कि प्राथमिकी सुचना रिपोर्ट दर्ज की गई।

कार व बोलेरो में टक्कर, दोनों पक्षों पर प्रकरण दर्ज

पिपलियामंडी, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। कार व बोलेरो में हुई टक्कर के मामले में पुलिस ने दोनों पक्षों केस दर्ज किया। देथल (मनासा) निवासी अशोक सेन ने पिपलिया थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि बोलेरो जीप (एमपी 44 सीए 3137) से बही कार्यक्रम में जा रहा था, इसी दौरान बही फन्टे पर क्रास करने के दौरान मंदसौर की ओर से आ रही कार (एमपी 13 जेडएल 6353) के ड्राइवर ने तेज व लापरवाहीपूर्वक चलाकर बोलेरो को टक्कर मार दी, जिससे बोलेरो का गेट टूट गया व वाहन को नुकसान पहुंचा। बोलेरो में सवार लोगों को चोंट नही आई। पुलिस ने कार चालक पर केस दर्ज किया। इसी तरह नागदा निवासी विक्रम गुर्जर ने शिकायत दर्ज कराई कि मैं ड्राइवर मांगीलाल आजाद के साथ नीमच जा रहे थे, बही फन्टे पर मेरी अरटिका कार (एमपी 13 जेडएल 6353) को बोलेरो (एमपी 44 सीए 3137) के ड्राइवर ने टक्कर मार दी, जिससे बोनट व बम्फर टूट गए व कार पलट गए। एयरबेग्स खुल जाने से हमें चोंट नही आई। पुलिस ने बोलेरो ड्राइवर पर केस दर्ज किया।

माध्यता देने से पहले निजी स्कूलों का अधिकारी करेंगे निरीक्षण

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। मप्र माध्यमिक शिक्षा मंडल बोर्ड के स्कूलों को नवीन मान्यता व मान्यता नवीनीकरण देने से पहले जिला शिक्षा अधिकारी(डीईओ) निरीक्षण करेंगे। वहीं सीबीएसई व आइसीएसई बोर्ड के स्कूलों का भौतिक सत्यापन संभागीय संयुक्त संचालक (जेडी) द्वारा किया जाएगा। इस संबंध लोक शिक्षण संचालनालय (डीपीआई) ने आदेश जारी कर दिए हैं।

मप्र बोर्ड के नौवीं से 12वीं कक्षा तक के निजी स्कूलों को नवीन मान्यता व मान्यता नवीनीकरण के आवेदन करने के बाद डीईओ के नेतृत्व में विकासखंड स्त्रोत समन्वयक (बीआरसी) को 15 दिन में भौतिक सत्यापन करना होगा। यह रिपोर्ट डीईओ को भेजना होगी। डीपीआइ ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के नवीन मान्यता व मान्यता नवीनीकरण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। निजी स्कूलों को 25 नवंबर तक आवेदन करने होंगे। वहीं सीबीएसई व आइसीएसई बोर्ड के निजी स्कूलों को 30 दिसंबर तक आवेदन करने होंगे।

एक ही दिन में 100 लोगों की समस्या सुनी, 65 ने वापस ले ली शिकायत

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। शहर के पुलिस कंट्रोल रूम पर शनिवार को सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों के निराकरण के लिए शिविर का आयोजन किया गया। इसमें पुलिस कप्तान अभिषेक आनंद, एएसपी गौतम सोलंकी और उन थानों के टीआई भी मौजूद रहे, जिनकी शिकायतें सीएम हेल्पलाइन पर लंबित हैं। सुबह से शुरू हुआ शिकायतों के निस्तारण का सिलसिला शाम तक जारी रहा।

इससे पहले शुक्रवार को जिले के सभी थानों में कैंप लगाकर सीएम हेल्पलाइन पर लंबित शिकायतों का निवारण किया गया था। जो शिकायतकर्ता असंतुष्ट थे, उन्हें शनिवार को पुलिस कंट्रोल रूम में आयोजित शिविर में बुलाया गया। जिसमें करीब 100 से अधिक लोग पहुंचे, जिनकी शिकायतों को सुन उनका निवारण करने के प्रयास किए गए। इसमें कई लोगों ने सन्तुष्ट होकर सीएम हेल्प लाइन पर की गई शिकायतों को वापस ले लिया। पुलिस कप्तान श्री आनंद ने बताया कि जन शिकायत निवारण शिविर लगाया गया था। इसमें करीब 100 लोगो की शिकायतों को सुना गया। वहीं, 65 लोगों ने पुलिस की कार्रवाई से सन्तुष्ट होकर सीएम हेल्पलाइन पर की गई शिकायतों को वापस ले लिया हैं।

पुलिस कप्तान के प्रयास, आवेदक हुए संतुष्ट

अब संघ और भाजपा को नया अध्यक्ष घोषित करना मजबूरी है, दोनों के समन्वय से बने या एक की पसंद हो...

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रसाद नड्डा का कार्यकाल समाप्त हो चुका है। बीते लोकसभा चुनाव के नतीजे ने भाजपा के वर्तमान शीर्ष नेतृत्व की घट चुकी और विपक्ष की बढ़ चुकी लोकप्रियता के कारण भाजपा को अपने नए अध्यक्ष के चुनाव के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दखल के को बर्दाश्त करना पड़ेगा। सतह पर अभी तक जिन नामो को राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए चलाए जा रहे हैं, उनमें से किसी भी नाम पर वर्तमान डबल इंजन नेतृत्व तैयार नहीं है, ना ही होगा। इसी कारण समय लग रहा है और नए-नए नाम सतह पर आ भी रहे जा भी रहे है। वातावरण ऐसा बन चुका है कि महाराष्ट्र, झारखंड चुनाव के बाद किसी भी दिन नए अध्यक्ष का नाम भाजपा संगठन घोषित कर सकता है।

राजनीतिक चर्चाओं में सबसे पहला नाम संजय जोशी का लिया जा रहा है। इनके बारे में भाजपाई संघ कार्यकर्ता तक सभी जानते हैं कि वर्तमान एनडीए का डबल इंजन नेतृत्व इस नाम पर किसी भी कीमत पर सहमत नहीं होगा। संजय जोशी बेहतर संगठक है। उनके अपने संघ और भाजपा में समर्थक नेता पदाधिकारी हैं। इतना ही सच यह भी है कि वर्तमान एनडीए सरकार के मुखिया नरेंद्र मोदी और संजय जोशी की अदावत सार्वजनिक जानकारी बनी हुई है। इसलिए एक पक्ष दावे से यह कहता नजर आता है कि संजय जोशी अध्यक्ष तो क्या किसी पद पर नहीं आ सकते हैं। हालांकि, वे बहुत काबिल है। संघ यह बात पहले से ही जानता है। अत: संघ चाहता तो बीते 10 साल जोशी को अज्ञातवास में नहीं गुजारना पड़ते!

चन्द्रमोहन भगत

अज्ञातवास भी इसलिए समाप्त हुआ कि राष्ट्रीय अध्यक्ष के विकल्प को इस बार फिर से संघ अवतरीत करने जा रहा है। यह भी शाश्वत है कि संघ स्वरचित संगठन चाहता है, पर विवाद रहित रचनाकार हो। फिर भले ही संघ को अपनी पसंद को हाशिए पर ही क्यों न रखने पड़े। यह सभी जानते हैं कि संघ के अपनी पसंद के ऐसे दर्जनों नाम है जो निर्विवाद रह संगठन में अपना दायित्व निभाते रहे हैं। महाराष्ट्र झारखंड चुनाव के नतीजे के पहले ही भाजपा की राष्ट्रीय बैठक होना तय हो गया है। इसमें राष्ट्रीय पदाधिकारी के अलावा राज्यों के अध्यक्ष, महामंत्री, सदस्यता अभियान प्रमुख और प्रदेश प्रभारी तक को अपने दायित्व की अपडेट रिपोर्ट के साथ पहुंचना है। करीब 7 घंटे चलने वाली इस बैठक में गृहमंत्री अमित शाह भी उपस्थित रहने वाले हैं। सूत्रों पर भरोसा करें तो नरेंद्र मोदी के विकल्प पर संगठन पर जिसका कब्जा होगा, वही किसी नाम की घोषणा कर पाएगा। इसी मुद्दे की अहमियत के कारण अमित शाह ने अभी तक इस बैठक के एजेंडा से लेकर पदाधिकारी के नाम तक तय कर लिए हैं।

राष्ट्रीय कार्यालय से जारी पत्र अनुसार 6 घंटे से अधिक समय तक ये बैठक चलेगी और इसी में नए राष्ट्रीय अध्यक्ष का नाम तय हो जाएगा, फिर उस नाम की घोषणा भले ही दिसंबर जनवरी में हो। इस बार अध्यक्ष पद के लिए नाम संघ समर्थक का बनाया जाना है। इसलिए माना जा रहा है कि एक दशक से भाजपा स्वयं राष्ट्रीय अध्यक्ष और पदाधिकारी तय करती रही है। सरकारे जरूर बनाते रहे हैं पर जनसाख और संगठन से ज्यादा सहारा सरकारी एजेंसियों का लिया जाता रहा है। इसका नुकसान भाजपा को तो कुछ नहीं हुआ पर संघ को अपने विचारधारा के प्रचार में अवरोध झेलना पड़ रहे हैं। ऐसे अवरोध हाल के बीते और चल रहे चुनाव में भुगतने पड़े थे और पड़ रहे हैं। यही कारण रहा कि संघ प्रमुख मोहन भागवत को भी कहना पड़ा था की राजनीति में विरोधी अनुपयुक्त शब्द है। जिसकी सरकार बनती है वह पक्ष, जिसकी नहीं बनती वह प्रतिपक्ष कहलाते हैं। लोकतंत्र में सरकारी पक्ष और प्रतिपक्ष को मिलाकर चलना पड़ता है। अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र में भी प्रतिपक्ष की उपस्थिति और महत्व को ससम्मान स्वीकारा जाता है।

विचार-मंथन

ट्रूडो सरकार ने भारत-कनाडा रिश्तों में और गहरी की खाई

ह्यकनाडा ने एक बार फिर भारत को उकसाने वाली हरकत की है। यह समझना मुश्किल है कि कनाडा को भारत से आखिर खुन्नस किस बात की है। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर और उनकी आस्ट्रेलियाई समकक्ष पेनी वोंग ने एक आस्ट्रेलियाई टीवी चैनल पर संयुक्त प्रेस वार्ता की थी। कनाडा ने उस चैनल पर ही पाबंदी लगा दी। कनाडा के लोग उस वार्ता को देख नहीं पाए। इसलिए कि जयशंकर ने कनाडा के साथ तल्ख रिश्तों को लेकर पूछे गए सवालों का कड़ा जवाब दिया था। विचित्र है कि एक तरफ तो कनाडा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की दुहाई देता है, दूसरी तरफ वह भारत का पक्ष रोकने का ऐसा प्रयास करता देखा जा रहा है। अगर भारतीय विदेश मंत्री की किसी बात पर उसे एतराज था, वह उस पर प्रतिक्रिया देता। उसकी इस हरकत पर स्वाभाविक ही चौतरफा निंदा हो रही है। भारत से बेशक उसके तनावपूर्ण संबंध हों, पर आस्ट्रेलिया तो उसका बहुत करीबी है। आस्ट्रेलियाई चैनल के साथ उसका बर्ताव हैरान करने वाला है। भारत से कनाडा की तकरार इस बात को लेकर है कि उसके मुताबिक निज्जर की हत्या में भारतीय अधिकारियों का हाथ था। हालांकि यह बात वह अब तक साबित नहीं कर सका है। भारत बार-बार सबूत मांगता है कि कनाडा निज्जर हत्या मामले से संबंधित सबूत पेश करे, मगर वह कोई ठोस सबूत पेश करने के बजाय सार्वजनिक मंचों से एक के बाद एक आरोप लगाता रहा है। पहले उसने भारतीय खुफिया एजंसियों पर दोष मढ़ा, फिर भारतीय उच्चायोग के अधिकारियों को शक के दायरे में डाल दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि भारत ने अपने राजनयिकों को वहां से वापस बुला लिया और कनाडा के राजनयिकों को वापस भेज दिया। फिर उसने इस मामले का आरोप भारत के गृहमंत्री पर भी मढ़ दिया। यही नहीं, भारत को साइबर सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करने वाले देशों की सूची में डाल दिया। जबकि छिपी बात नहीं है कि कनाडा खुद भारत में अलगाववादी खालिस्तान समर्थकों को पनाह दिए हुए है। वे वहां भारत-विरोधी गतिविधियां चलाते हैं और भारत के बार-बार कहने के बावजूद कनाडा उन पर नकेल कसने की कोशिश नहीं करता। दिवाली के मौके पर ब्रैंपटन के एक मंदिर में जिस तरह खालिस्तान समर्थकों ने उपद्रव किया, उसमें वहां की पुलिस ने उपद्रवियों को संरक्षण दिया। इन हरकतों से जाहिर है कि कनाडा बेवजह भारत से रार मोल ले रहा है। कनाडा के साथ भारत के बहुत पुराने और मधुर संबंध रहे हैं, मगर जस्टिन ट्रूडो ने निज्जर हत्या मामले को कुछ ज्यादा ही तूल देकर उस रिश्ते को मटियामेट कर दिया है। अपेक्षा तो यह थी कि जस्टिन ट्रूडो प्रशासन भारत की चिंताओं को गंभीरता से लेता और अपने यहां पनाह पाई अलगाववादी ताकतों से निपटने का प्रयास करता। मगर उसने उन्हें न केवल बेलगाम छोड़े रखा, बल्कि उनके पक्ष में भी खड़ा रहा। सब जानते हैं कि जस्टिन ट्रूडो इस आशंका से घबराए हुए हैं कि आने वाले चुनाव में उन्हें करारी शिकस्त मिलने वाली है। मूल कनाडाई लोगों की नाराजगी की भरपाई करने के लिए वे भारतीय मूल के कनाडाई नागरिकों को अपने पाले में खींचने का प्रयास कर रहे हैं। मग ब्रैंपटन मंदिर में हुए हंगामे के बाद वह आधार भी खिसकता नजर आने लगा है।

भारत में अवैध आप्रवासी और उन्हें वापस भेजने का संकट

पूनम आई. कौशिश

वर्ष 1975 की गर्मियों में साइगोन के पतन के बाद राजनीतिक उत्पीड़न के भय से दक्षिण वियतनाम से हजारों लोगों ने पलायन किया। वे लकड़ियों की टूटी-फूटी नाव में सवार होकर वहां से बच निकले, जो आधुनिक इतिहास में समुद्र के रास्ते शरण लेने वालों का सबसे बड़ा पलायन था और इसके चलते इन लोगों को 'बोट पीपुल' की संज्ञा दी गई। विश्व समुदाय ने उन्हें शरणार्थियों के रूप में स्वीकार किया। अमरीका के अलावा कनाडा, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, थाईलैंड, मलेशिया और जापान, यहां तक कि छोटे से देश बरमूडा ने भी उन्हें शरण दी।

14 वर्ष बाद 1989 में विश्व समुदाय की सोच में बदलाव आया और ये 'बोट पीपुल' उनके गले की फांस बन गए। यही नहीं, 'बोट पीपुल' की एक नई पीढ़ी तैयार हुई जिनमें आर्थिक शरणार्थी अर्थात किसान, फैक्टरी के कामगार और श्रमिक सुखद भविष्य के लिए पलायन करने लगे। 49 वर्ष बाद भारत में इतिहास अपनी पुनरावृत्ति कर रहा है। यहां के 'बोट पीपुल' अर्थात अवैध आप्रवासी चर्चा में हैं। पड़ोसी देशों से नई आर्थिक संभावनाओं की तलाश में लाखों की संख्या में ऐसे अवैध अप्रवासी भारत में आ रहे हैं और इसकी शुरुआत 1971 के युद्ध के बाद बंगलादेश से हुई तथा उसके बाद पाकिस्तान व म्यांमार से ऐसे अवैध आप्रवासी आए और तब से लगभग चाढ़े 4 करोड़ अवैध आप्रवासी भारत के गले की फांस बने हुए हैं। तथापि अब स्थिति बदल रही है। जिस तरह वर्ष 1989 में बोट पीपुल ने विश्व समुदाय की सहानुभूति खोई, भारत भी अब इस बारे में जागरूक हो गया है और उसने अपनी सोच बदली है। भारत सरकार अब उनके प्रत्यर्पण के बारे में विचार कर रही है। भारत के गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि ऐसे ढाई करोड़ अवैध बंगलादेशी आप्रवासियों की पहचान कर उन्हें वापस भेजा जाए। इसी के साथ ही 11700 पाकिस्तानी, जो भारत में निर्धारित अवधि से अधिक समय से रह रहे हैं, उन्हें भी वापस भेजा जाए। पिछले सप्ताह झारखंड में चुनाव प्रचार करते हुए असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि जनांकिकी में बदलाव मेरे लिए एक बड़ा मुद्दा है। यह राजनीतिक मुद्दा नहीं, अपितु हमारे जीवन-मरण का मुद्दा है। मैं अवैध घुसपैठियों के विरुद्ध बिगुल बजाता हूं। हमें झारखंड को उनसे मुक्त करना होगा। मदरसों के माध्यम से ऐसे अवैध अप्रवासियों को आधार कार्ड जारी किए जा रहे हैं। आदिवासियों की संख्या घट रही है और मुसलमानों की संख्या बढ़ रही है। उन्होंने यह भी कहा कि आज असम में मुसलमानों की जनसंख्या 40 प्रतिशत है जबकि 1951 में 12 प्रतिशत थी और असम के 9 जिले मुस्लिम बहुल जिले बन चुके हैं तथा राज्य के 126 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में उनका वर्चस्व है। खुफिया रिपोर्टों का कहना है कि पिछले 70 वर्षों में असम की जनसंख्या 32,90,000 से बढ़कर 1,46 करोड़ हो गई है अर्थात इसमें 343.77 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि इस अवधि के दौरान भारत की जनसंख्या में 150 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आशानुरूप इंडिया गठबंधन के धर्मनिरपेक्ष नेता जो अल्पसंख्यक वोट बैंक के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, उन्होंने इस मुद्दे का सांप्रदायीकरण किया और अपने वोट बैंक को बढ़ाने के लिए अवैध आप्रवासियों को अविवेकपूर्ण ढंग से बसाया, जिससे स्थानीय मूल लोगों की आजीविका और पहचान संकट में आ रही है। भारत में 3,84,00,826 बंगलादेशी, 1 लाख बर्मी और 11,18,865 रोहिंग्या परिवार रह रहे हैं। बिहार के 7 जिले, बंगाल, पूर्वोत्तर क्षेत्र और राजस्थान इससे प्रभावित हैं। दिल्ली में 15 लाख से अधिक ऐसे लोग रह रहे हैं। महाराष्ट्र में 1 लाख से अधिक अवैध बंगलादेशी रह रहे हैं। मिजोरम में बाहरी लोगों के विरुद्ध आक्रोश के चलते वहां आंदोलन होते रहते हैं। पिछले 2 दशकों में नागालैंड में अवैध बंगलादेशीयों की संख्या लगभग 3 गुना हुई है, जो 1991 में 20,000 थी परंतु 2001 में बढ़कर 75,000 से अधिक हो गई। त्रिपुरा में इन लोगों ने स्थानीय पहचान को समाप्त कर दिया है। 1951 में स्थानीय लोगों की जनसंख्या 59.1 प्रतिशत थी जो 2011 में घटकर 31.1 प्रतिशत रह गई। राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में अवैध बंगलादेशीयों और रोहिंग्याओं ने राशन कार्ड प्राप्त करने के लिए कानून का लाभ उठाया। केरल में भी उनकी संख्या बढ़ रही है क्योंकि वहां पर कुशल और अर्ध कुशल श्रमिकों की मजदूरी पश्चिम बंगाल और असम की तुलना में अधिक है और उन्हें वैध दस्तावेज भी उपलब्ध कराए गए हैं। अवैध बंगलादेशी आप्रवासी पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना और मुर्शिदाबाद जिले में प्रवेश करते हैं और वहां पर स्थानीय लोगों की मदद से बटाई पर खेती करते हैं, जिससे जहां 1951 में मुसलमानों की जनसंख्या 19.25 प्रतिशत थी, वह 2011 में बढ़कर 36.1 प्रतिशत हो गई। यही स्थिति उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल की भारत-नेपाल सीमा पर भी है। पिछले 3 सालों से इस सीमा पर मस्जिदों और मदरसों की बढ़ती संख्या से गंभीर सुरक्षा इक्षचता पैदा हुई है। इस समस्या का समाधान भारत के मूल सुरक्षा हितों, इसकी एकता, अखंडता और स्थिरता को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। बंगलादेश इस्लामिक कट्टरवादियों पर दबाव बनाने में विफल रहा है, इसलिए ऐसे इस्लामिक कट्टरवादी गैर-सरकारी संगठनों के कार्यकलापों की आड़ में खुलेआम घूम रहे हैं। इसके साथ ही बंगलादेश और म्यांमार पर चीन का प्रभाव बढ़ने से भारत की सुरक्षा के लिए बड़ा संकट पैदा हो सकता है। निस्संदेह सरकार इसके समाधान के लिए प्रयासरत है। इसके लिए केन्द तथा राज्यों को हमारी सामाजिक प्रणाली में आई कमियों को दूर करना होगा। नई सोच अपनानी होगी और कड़े प्रतिरोधक उपाय करने होंगे। व्यावहारिक दृष्टि से पुलिस व्यवस्था को सुदृढ़ करना और सीमा प्रबंधन आवश्यक है। पुलिस बल में स्थानीय लोगों की भर्ती की जानी चाहिए। यदि अवैध अप्रवासियों को सीमा पर नहीं रोका गया तो फिर उनको वापस भेजना कठिन है। दक्षिण एशिया की आधे से अधिक जनसंख्या ऐसे क्षेत्रों में रहती है जिन्हें वर्ष 2050 तक जलवायु परिवर्तन से गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों की श्रेणी में रखा गया है। यदि इन क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोगों का विस्थापन हुआ तो पलायन और बढ़ेगा। समय की मांग है कि अवैध आप्रवासियों के साथ गंभीरता से निपटा जाए।

आत्मज्ञान की यात्रा का रहस्य, अपने भीतर छिपे खजाने को जानें

शिशिर शुक्ला

हम जो कुछ अपनी ज्ञानेंद्रियों के जरिए अनुभव करते हैं, वह सब बाह्य जगत का एक भाग है। हमारी समस्त भौतिक आवश्यकताएं इस बाहरी संसार के माध्यम से ही पूरी होती हैं। चूंकि हमारी सामान्य दिनचर्या में हमें जिन चीजों की आवश्यकता पड़ती है, हम उनके लिए पूर्णतया बाह्य जगत पर ही निर्भर हैं, इसलिए बाह्य जगत के साथ हमारा एक गहरा अंतर्संबंध विकसित हो जाता है। लेकिन इस बाह्य जगत के अतिरिक्त एक ऐसा संसार भी है, जो हमारे ही अंदर मौजूद होते हुए भी हमें दिखाई नहीं देता। इस अलौकिक संसार को हम अंतर्जगत कहते हैं। यह पूरी तरह हमारे अंदर ही निहित होता है, लेकिन हमारी भौतिक आंखों के पास वह क्षमता नहीं होती कि वे दिव्यता का दर्शन करने में सक्षम हो सकें। हमारी ज्ञानेंद्रियां सामान्य रूप से क्षमता के उस स्तर को स्पर्श नहीं कर पातीं जिस स्तर तक पहुंचकर हम इस दिव्य जगत की अनुभूति कर पाने में समर्थ हो सकते हैं। जहां बाह्य जगत हमारे भौतिक शरीर से बाहर की ओर विस्तृत है, वहीं अंतर्जगत हमारे शरीर के अंदर विद्यमान है। दूसरे शब्दों में यह कहना उचित होगा कि हमारा भौतिक शरीर बाह्य जगत और अंतर्जगत के बीच एक परिसीमा की भूमिका का निर्वहन करता है। चूंकि बाह्य जगत और अंतर्जगत दोनों का विस्तार परस्पर विपरीत दिशाओं में है, इसलिए दोनों को एक साथ अनुभव कर पाना या समझ पाना सर्वथा संभव है। विज्ञान के नियम के अनुसार दो परस्पर विपरीत दिशाओं में एक साथ गति कर पाना संभव नहीं है। यही कारण है कि हम आजीवन अपने अंतर्जगत से अपरिचित ही रहते हैं, क्योंकि हमारी यात्रा हमेशा बाह्य जगत की ओर उन्मुख होने के कारण हम यह जानने का प्रयास नहीं कर पाते कि हमारे अंदर क्या है। अगर कभी खुद से कुछ प्रश्न किए जाएं, उदाहरण के लिए, मैं कौन हूं, मैं कहां से आया हूं, मेरा आने का प्रयोजन क्या है, उद्देश्यसिद्धि के बाद मैं कहां जाऊंगा, तो इतना निश्चित है कि आमतौर पर हम इन प्रश्नों का उत्तर खोज पाने में असफल रहेंगे। कारण यह है कि इन प्रश्नों का उत्तर हमारे अंतर्जगत में मौजूद है और अंतर्जगत के ज्ञान को लेकर हम बेहद अनजान हैं। इसलिए इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढ पाना हमारे लिए असंभव होगा। ये प्रश्न नितांत गूढ़ प्रश्न हैं, इनका उत्तर प्राप्त करने के लिए हमें कुछ समय के लिए बाहरी संसार से विमुख होकर अपने आंतरिक जगत में कदम रखते हुए अपनी गहराइयों में उतरना पड़ेगा। जहां बाहरी संसार व्यापक आयाम तक फैला हुआ है, वहीं आंतरिक संसार नितांत सूक्ष्म आयामों में विद्यमान है। अंतर्जगत की यही सूक्ष्मता इसे बाह्य जगत से भिन्न कर देती है। सूक्ष्मता के कारण ही आंतरिक जगत ज्ञानेंद्रियों की क्षमताओं से परे हो जाता है। अंतर्जगत की यात्रा ध्यान के माध्यम से की जा सकती है। ध्यान का अर्थ है- मन में शून्य विचारों का होना। मस्तिष्क में विचारों की उत्पत्ति में पूरा-पूरा योगदान बाह्य जगत का होता है और विचारों के उपस्थित रहते हुए ध्यान की अवस्था को प्राप्त नहीं किया जा सकता। कुल मिलाकर, अपने आंतरिक जगत की यात्रा के लिए हमें बाह्य जगत से विमुखता सुनिश्चित करनी होगी। हमारे अंतर्जगत में क्षमताओं एवं संभावनाओं का एक अमूल्य कोष छिपा हुआ है, लेकिन हम अपने संपूर्ण जीवन में बाहरी संसार की आपाधापी के कारण अपने ही अंदर छिपे इस बेशकीमती खजाने को प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करते। हमारे अंतर्जगत की यात्रा के रथ का सारथी हमारा अंतर्मन होता है। एक बार अगर हमने अपने अंतर्मन को साध लिया, तब फिर हमारे लिए अपने आप को जानना और उन तमाम प्रश्नों का उत्तर ढूंढ पाना, जो अपने आप में बड़ी गूढ़ता को समाहित किए हुए थे, एक सरल कार्य हो जाता है। अंतर्मन से सच्ची मित्रता हो जाने पर हमारे सामने सफलताओं के अनेक द्वार खुल जाते हैं। बाहरी जगत की वे समस्याएं एवं चुनौतियां जो हमें किसी पहाड़ के बराबर लगती थीं, अंतर्मन से साक्षात्कार के बाद वे हमें चुटकियों का खेल लगने लगती हैं। हालांकि यह सब इतना आसान नहीं है। आंतरिक जगत से परिचित होने के लिए हमें बाह्य जगत की ओर अपनी गति को विराम देते हुए विपरीत दिशा में लौटना पड़ सकता है, जो एक दुस्साध्य कार्य है। लेकिन इतना निश्चित है कि जब हम एक बार अपने आंतरिक जगत में प्रवेश कर जाएंगे, तब फिर हमें उसे यात्रा में अद्भुत आनंद की अनुभूति होने लगेगी और उस दशा में हमें पुनः विपरीत दिशा में अर्थात बाहरी जगत की ओर लौटना कभी अच्छा नहीं लगेगा।

ट्रंप की जीत यूरोप, नॉटो की बढ़ी टेंशन, ईरान और चीन भी परेशान

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप ने शानदार जीत दर्ज की है। उन्होंने डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस को एक बड़े अंतर से मात दी है। इसी के साथ सीनेट में भी रिपब्लिकन पार्टी को बहुमत हासिल हो गया और हाउस में भी वह अपने प्रतिद्वंद्वी डेमोक्रेटिक पार्टी से काफी आगे है। ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल के लिए 20 जनवरी को अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति का पदभार संभालेंगे। इस चुनाव में ट्रंप को काफी उतार-चढ़ाव देखने को मिले। इसी दौरान ट्रंप पर एक बार जानलेवा हमला भी हुआ और कम से कम दो बार हमले का प्रयास किया गया। इसके बावजूद ट्रंप विजेता बनकर उभरे। ऐसे में जानें कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में अमेरिकी विदेश नीति कैसी होगी और बाइडन के कार्यकाल से कितना बदलाव आएगा। अमेरिकी राष्ट्रपति पद को फिर से हासिल करने के लिए अभियान चलाते हुए डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि वह 24 घंटे में यूक्रेन में रूस के युद्ध को समाप्त कर देंगे। उन्होंने चेतावनी भी दी थी कि अगर वह चुनाव हार गए तो इजरायल को 'खत्म' कर दिया जाएगा और उन्होंने चीनी आयात पर नए टैरिफ लगाने की कसम खाई थी। ट्रंप के समर्थकों का कहना है कि उनके व्यक्तित्व की ताकत और उनकी 'ताकत के जरिए शांति' दृष्टिकोण विदेशी नेताओं को उनकी इच्छा के मुताबिक झुकाने और रिपब्लिकन द्वारा वर्णित 'जलती हुई दुनिया' को शांत करने में मदद करेगा। ट्रंप ने वैश्विक संकटों के लिए राष्ट्रपति जो बाइडन की कमजोरी को जिम्मेदार ठहराया है। हालांकि, बाइडन की डेमोक्रेटिक पार्टी इन आरोपों को खारिज करती है। ट्रंप जनवरी में अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में व्हाइट हाउस में प्रवेश करेंगे। हालांकि, ट्रंप की जीत से अमेरिका के दोस्त और दुश्मन दोनों ही परेशान हैं। उन्हें आशंका है कि क्या उनका दूसरा कार्यकाल भी उसी तरह की उथल-पुथल और अप्रत्याशितता भरा होगा, जो 2016 से 2020 तक देखने को मिला था। हालांकि, ट्रंप के पहले कार्यकाल को अक्सर विश्व मंच पर उनकी 'अमेरिका फर्स्ट' संरक्षणवादी व्यापार नीति और अलगाववादी बयानबाजी द्वारा परिभाषित किया गया था, जिसमें नाटो से हटने की धमकियां भी शामिल थीं। साथ ही, उन्होंने उत्तर कोरिया के साथ शिखर सम्मेलन आयोजित करके एक सौदा करने वाले बिजनेसमैन के रूप में अपनी स्वयंभू छवि को आगे बढ़ाने की कोशिश की। हालांकि, आखिर में वह उत्तर कोरिया को अपने परमाणु हथियार कार्यक्रम को रोकने में विफल रहे। उन्होंने अपने पहले कार्यकाल में इजरायल और कई अरब पड़ोसियों के बीच सामान्यीकरण वार्ता की मध्यस्थता की, जिसमें कुछ हद तक सफलता भी मिली। उस दौरान इजरायल को संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन और सूडान जैसे मुस्लिम दोस्त भी मिले। यूरोपियन काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस के विश्लेषकों ने अमेरिकी अभियान के दौरान एक ब्लॉग पोस्ट में लिखा, विदेश नीति की बात करें तो डोनाल्ड ट्रंप अनिश्चित और असंगत बने हुए हैं। उन्होंने कहा, यूरोपीय लोग अभी भी ट्रंप के पहले कार्यकाल के घावों को भरने की कोशिश कर रहे हैं- वे ट्रंप के टैरिफ, यूरोपीय संघ और जर्मनी के प्रति उनके गहरे विरोध को नहीं भूले हैं। ट्रंप और उनके वफादार इस तरह की आलोचना को खारिज करते हैं, इस बात पर जोर देते हुए कि अन्य देशों ने लंबे समय से अमेरिका का फायदा उठाया है और वह इसे रोक देंगे। ट्रंप यूक्रेन में रूस के युद्ध पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, यह उनके एजेंडे के लिए टोन सेट कर सकता है और संकेत दे सकता है कि वह नाटो और प्रमुख अमेरिकी सहयोगियों के साथ कैसे व्यवहार करेंगे।

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5412

			7		9		2	
		9	2	1	6			5
5			8		4			
	6					4		
3	7			4			6	1
		2					5	
			9					3
7			3	8	5	2		
	3		4		1			

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5411

8	5	3	2	4	1	6	9	7
9	4	2	6	5	7	8	1	3
1	7	6	9	8	3	2	4	5
5	6	9	4	7	2	1	3	8
2	3	4	8	1	5	9	7	6
7	8	1	3	6	9	4	5	2
6	9	7	5	2	4	3	8	1
4	2	5	1	3	8	7	6	9
3	1	8	7	9	6	5	2	4

वर्ग पहेली 5412

संकेत: बाएं से दाएं
1. भारत के राज्य का प्रथम राज्यपाल होने का गौरव इस महिला को प्राप्त है (7)
6. पहाड़ी के नीचे की घाटी का मैदान (3)
7. वस्तु, पदार्थ, द्रव्य, चीज (उर्दू)(1)
8. यह नेपाल और बिहार में बहने वाली नदी है जिसे नेपाल में शालिग्रामी कहते हैं (3)
10. दुर्घटना, अनहोनी, विपदा (3)
14. अवनमित, वक्र टेढ़ा (2)
15. जिसके दिल में रहम या करुणा का भाव हो, कृपालु, दयालु (5)
17. [illegible] (2)
18. उमंग, मौज, तरंग (3)
20. यह वाराणसी का पुराना नाम है (2)
21. पूर्व और उत्तर के मध्य का कोना (3)
24. जल में विचरण करने वाली प्राणी (4)
25. बालमा, प्रेमी, साजन, 1951 की देवानंद और सुरैया अभिनीत एक फिल्म (3)

ऊपर से नीचे
1. चिर नवीन, चिरयुवा (5)
2. देह के बाल, रोआं (2)
3. [illegible] (2)
4. असम की पहाड़ी जंगलों में रहने वाली एक जाति, अनुपस्थिति, गैर हाजिरी (2)
5. यह टूर्नामेंट एशिया का सबसे पुराना फुटबॉल टूर्नामेंट और दुनिया का तीसरा सबसे पुराना टूर्नामेंट है (5)
9. काजल शब्द का अपभ्रंश (3)
11. ज्वलनशील, जलने वाला (5)
12. गाए जाने वाले वेदमंत्र (2)
13. समझौता, संधि, मुआहिदा (3)
16. प्रेमपात्र, माशूक, दिल उड़ा ले जाने वाला (उर्दू)(4)
19. धनवान, धनाढ्य (3)
20. [illegible] (2)
22. तड़क-भड़क, ठाट-बाट, वैभव (2)
23. [illegible] (2)

वर्ग पहेली 5411 का हल

आज का राशिफल

मेष [illegible]

वृषभ [illegible]

मिथुन [illegible]

कर्क [illegible]

सिंह [illegible]

कन्या [illegible]

तुला [illegible]

वृश्चिक [illegible]

धनु [illegible]

मकर [illegible]

कुंभ [illegible]

मीन [illegible]

अम्बे माता मंदिर में विशाल भण्डारा आज

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। अंबे माता मंदिर सहकारी बाजार रोड नई आबादी पर विशाल भंडारे का आयोजन रविवार को रखा गया है। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भंडारा 10 नवंबर को प्रात: 10रू30 बजे से प्रारंभ होगा। भंडारे के पूर्व महाआरती का आयोजन होगा, प्रात: 10रू00 बजे महाआरती के बाद कन्या पूजन होगा और महाप्रसादी धर्म प्रेमी जनता में वितरित की जाएगी। जय माता दी ग्रुप नई आबादी मंदसौर के सभी सदस्यों ने मंदसौर की धर्म प्रेमी जनता से महा आरती का लाभ लेने व महाप्रसादी ग्रहण कर पुण्य लाभ लेने की अपील की।

सिद्धिविनायक गणेश मंदिर पर अन्नकूट महोत्सव आज

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। श्री सिद्धिविनायक गणपति उत्सव समिति द्वारा आयोजित श्री गणेश मंदिर जिला सहकारी बैंक परिसर नई आबादी सुचित्रा टॉकीज के पास मंदसौर पर दिनांक 10 नवंबर रविवार को 06:00 बजे नवम् अन्नकूट महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भगवान गणेश जी की महाआरती की जावेगी एंव महाआरती पश्चात अन्नकुट प्रसाद वितरण होगा। श्री सिद्धिविनायक गणपति उत्सव समिति के संरक्षक राजेंद्र अग्रवाल, अध्यक्ष पुरुषोत्तम चंदवानी एंव सचिव पारस मावर ने समस्त धर्म प्रेमी सज्जनों से आग्रह किया कि अन्नकुट महोत्सव में पधारकर धर्म लाभ लेवें। उक्त जानकारी समिति सह सचिव निलेश जैन ने दी।

बड़े बालाजी मंदिर पर अन्नकूट महोत्सव 16 को

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी पुराना बस स्टेण्ड स्थित चमत्कारी श्री बड़े बालाजी मंदिर पर श्री हनुमान प्राकट्योत्सव के उपलक्ष्य में 16 नवम्बर को भव्य अन्नकूट महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। मंदिर समिति के अध्यक्ष पं. दिलीप शर्मा व प्रवक्ता रवि ग्वाला ने बताया कि 16 नवम्बर, शनिवार को सायं 6.30 बजे भव्य महाआरती का आयोजन होगा। उसके पश्चात् अन्नकूट का बालाजी महाराज को भोग लगाकर भक्तों में वितरित किया जाएगा। मंदिर समिति के विनय दुबेला, नरेश चंदवानी, हिम्मत डांगी, विनोद रूनवाल, जितेंद्र व्यास, दिनेश जोशी ऊँशांति, वर्दीचन्द कुमावत, राजाराम तंवर, कमल कण्डारे, हेमंत सुरा, अशोक परमार, चोथमल शर्मा, अनूप माहेश्वरी, गोविन्द नागदा, अनिल सुराह, महेंद्रसिंह सिसोदिया, सज्जनलाल खमेसरा, कपिल सोलंकी, हरीश साल्वी ने सभी बालाजी भक्तों से उपस्थित होकर अन्नकूट प्रसादी का लाभ लेने की अपील की है।

शौर्य वीर, दानिया व कनिका ने किया कांस्य पदक पर कब्जा

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर के खिलाड़ियों ने एक बार फिर रोलर स्केटिंग राज्य स्तरीय स्केटिंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन पदकों पर कब्जा किया ग्वालियर में आयोजित हुई राज्य स्तरीय रोलर स्केटिंग प्रतियोगिता जो मध्य प्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित की गई थी मैं मंदसौर के खिलाड़ी शौर्य वीर सिंह चौहान ने 500 मी क्वाड में कांस्य पदक दानिया बनेटीया ने 1000 मी क्वाड में कांस्य पदक व कनीका मंगल ने 1000 मी इन लाइन कैटेगरी में कांस्य पदक जीतकर शानदार प्रदर्शन किया इसके अतिरिक्त मंदसौर से 17 खिलाड़ी इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित हुए थे इनमें से अधिकांश खिलाड़ी फाइनल रेस में चौथे पांचवें स्थान पर रहे जिसमें सौम्या चौहान, आरोन घोरपडे, देशना जैन, प्रियांशी सरतलिया खुशी राया, युग श्रीवास्तव, देही शर्मा दृष्टि शर्मा, कृति सेठिया, उबैद छिपा, हितांश सोनी आदि प्रमुख खिलाड़ी रहे इन खिलाड़ियों के साथ प्रशिक्षक के रूप में राकेश श्रीवास्तव, सचिन काले, देवेंद्र बैरागी तथा अभिभावक में दीपक मंगल, श्वेता सरतलिया, नीलम घोरपडे मौजूद थे प्रतियोगिता 11, 14, 17 व 19 वर्ष आयु वर्ग बालक बालिका में आयोजित की गई जिसमें रिंग रेस व रोड रेस दोनों का आयोजन हुआ जिसमें पूरे मध्य प्रदेश के विभिन्न संभागों से 300 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया यहां से चयनित खिलाड़ी स्कूल गेम फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा दिल्ली में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे यह सभी खिलाड़ी जिला स्केटिंग संघ में नियमित रूप से अभ्यास करते हैं व इससे पहले भी कई राज्य व राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त कर चुके हैं खिलाड़ियों के इस उपलब्धि पर जिला स्केटिंग संघ के अध्यक्ष कपिल भंडारी, अनिल चौधरी, अनिल जैन, जिला खेल अधिकारी विजेंद्र देवडा लीड कॉलेज खेल अधिकारी राजू कुमार महेंद्र शुक्ला, अविनाश उपाध्याय, कुलदीप सिंह चौहान, जलज सिसोदिया, दिव्यांशु परमार, कनिष्क पवार, लाभांशी हेजू सहित अभिभावकों को व सीनियर खिलाड़ियों ने बधाई दी व उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

बड़े अस्पताल में विश्व रेडियोग्राफी दिवस मनाया

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। विश्व रेडियोग्राफी दिवस को जिला चिकित्सालय मंदसौर के सभी रेडियोग्राफर के द्वारा संयुक्त रूप मनाया।। इस दिवस की शुरुवात 2012 से हुई थी, 8 नवंबर 1895 को महान जर्मन वैज्ञानिक विल्हेम कोनार्ड रोंजन सर द्वारा एक्सरे या एक्स रे रेडिएशन की खोज हुई थी, प्रगतिशील रेडियोग्राफर संघ के आवाहन पर प्रदेश के चिकित्सालयों में खतरनाक आयनिक विकिरण व संक्रमण क्षेत्र मे कार्यरत रेडियोग्राफर साथियों व प्रदेशवासियों को आज विश्व रेडियोग्राफी दिवस की 129 वीं वर्षगाँठ की बधाई शुभकामनाएं प्रदान की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ गोकुल सिंह चौहान ने दीप प्रज्वलित क़र रोंजन सर के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। रेडियोलॉजी एक्सरे जाँच का चिकित्सा विज्ञान के तीसरे नेत्र के साथ को विड-19 महामारी से जंग में रेडियोलॉजी जांच, चेस्ट एक्सरे, सीटी थोरेक्स का अहम महत्त्व रहा। प्रदेश में कोविड मरीजों की जाँच व मध्यप्रदेश शासन की निशुल्क जांच योजना में सराहनीय कार्य करने पर सभी साथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इसे विश्व को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र का तीसरा नेत्र व चमत्कारी खोज प्रदान करने वाले महान् विभूति परम् श्रद्धेय विलियम कोनार्ड रोन्जन को प्रभारी सिविल सर्जन डॉ सौरभ मंडवारिया, एक्सरे विभाग प्रभारी डॉ संजय शर्मा, डॉ हिमांशु यजुर्वेदी, सहायक आरएमओ डॉ आशीष वर्मा, संघ जिला अध्यक्ष मोहनलाल धनगर, प्रगतिशील रेडियोग्राफर्स संघ मंदसौर के पदाधिकारी व सदस्य ने शत-शत नमन किया गया। डॉ हिमांशु यजुर्वेदी ने बताया की चिकित्सा व जनोपयोगी कार्य में इस खतरनाक आयनिक विकिरण के सदुपयोग को देखते हुए इस महान् वैज्ञानिक को 1901 में प्रथम भौतिक नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया था परन्तु भारत में दुर्भाग्य से इस खतरनाक आयनिक विकिरण के उपयोग के साथ खतरों व सुरक्षा के प्रति जागरूकता की भारी कमी है। हमे गर्व है कि राज्य स्तर पर प्रगतिशील रेडियोग्राफर्स संघ मध्यप्रदेश ने पिछले कई सालों से आयनिक विकिरण खतरों के प्रति जागरूकता विश्व रेडियोग्राफी दिवस के मौके पर संगोष्ठी कर खतरनाक आयनिक विकिरण के खतरे व सदुपयोग के लिए जागरूकता अभियान चलाया है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. चौहान ने सभी स्टॉफ को डॉक्टर की सलाह पर एक्सरे करने की बोला गया। प्रभारी सिविल सर्जन ने सभी स्टॉफ को टीएलडी बेच लगाकर सुरक्षा साधन का उपयोग क़र एक्सरे करने की कहा। आपने कहा एक्सरे चिकित्सा जगत के लिए वरदान है तो अभिशाप भी है। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ गोकुल सिँह चौहान, प्रभारी सिविल सर्जन डॉ सौरभ मंडवारिया, एक्सरे विभाग प्रभारी डॉ संजय शर्मा, डॉ आशीष वर्मा डॉ हिमांशु युजुर्वेदी, प्रगतिशील रेडियोग्राफर संघ जिला अध्यक्ष मोहनलाल धनगर, रितु साहू, अजय गंगवाल, प्रदीप मालवीय, धनंजय शाक्य, अनिल शर्मा, दीपक मालवीय, सूरज सांकला एवं जिला चिकित्सालय स्टॉफ उपस्थित रहे।

बाईक रैली के माध्यम से न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह का शुभारम्भ

नीमच, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के आदेशानुसार सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में विधिक सेवा दिवस के उपलक्ष्य में 4 से 9 नवम्बर 2024 तक न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह का आयोजन किया गया। इसी अनुक्रम में प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, नीमच श्री वीरेन्द्र सिंह राजपूत एवं जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, नीमच श्रीमती नजमा बेगम के मार्गदर्शन में सम्पूर्ण नीमच जिले में भी न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह मनाया गया। न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह का शुभारंभ 4 नवम्बर 2024 को जिला न्यायालय परिसर नीमच से बाईक रैली के माध्यम से किया गया।

न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह कार्यक्रम का शुभारंभ, प्रधान जिला न्यायाधीश श्री वीरेन्द्र सिंह राजपूत द्वारा हरी झण्डी दिखाकर बाईक रैली को जिला न्यायालय से रवाना कर किया। बाईक रैली ने शहर के मुख्य मार्गों से होकर आमजनों के बीच जाकर विधिक जागरूकता का संदेश दिया गया। उक्त बाईक रैली में पैरालीगल वालेंटियर्स, पैनल अधिवक्ता, एलएडीसीएस, जिला न्यायालय, नीमच एवं कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीमच के अधिकारी, कर्मचारीगण आदि ने भाग लिया। बाईक रैली के आयोजन में पुलिस विभाग, नीमच का महत्वपूर्ण योगदान रहा। न्यायोत्सव विधिक सेवा सप्ताह कार्यक्रम हेतु बाईक रैली शुभारंभ के अवसर पर जिला मुख्यालय के समस्त न्यायाधीशगण, जिला अभिभाषक संघ के अधिवक्तागण, एलएडीसीएस, पैरालीगल वॉलेंटियर एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

जेल में आयोजित हुआ विधिक साक्षरता शिविर सम्पन्न– मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशों के पालन में न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह अन्तर्गत गत दिवस जिला जेल, नीमच एवं उपजेल, जावद में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में जिला जेल, नीमच में एलएडीसीएस से असिस्टेंट एवं पैरालीगल वॉलेंटियर तथा उपजेल, जावद में पैनल अधिवक्ता एवं पैरालीगल वॉलेंटियर ने सहभागिता की। शिविर के माध्यम से बंदियों को उनके कानूनी अधिकारों से अवगत कराया तथा महत्वपूर्ण कानूनी जानकारी भी प्रदान की गई।

वैकल्पिक विवाद समाधान विषय पर निबंध प्रतियोगिता

नीमच, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार चलाए जा रहे न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह अंतर्गत सी.आर.पी.एफ. हायर सेकण्डरी स्कूल मे वैकल्पिक विवाद समाधान विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री वीरेन्द्र सिह राजपूत के मार्गदर्शन एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती नजमा बेगम के निर्देशन में सीआरपीएफ हायर सेकेंडरी स्कूल नीमच में 'वैकल्पिक विवाद समाधान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें बडी संख्या में विद्यार्थियों ने सहभागिता कर उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह प्रतियोगिता महाविद्यालय के प्राचार्य श्रीवास्तव के समन्वय से सम्पन्न हुई।

न्यायाधीश ने दी कानून की जानकारी

पिपलियामंडी, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से आम व्यक्ति बिना किसी संकोच के विधिक मदद प्राप्त कर सकता है। आज पिपलियामंडी के अयोध्या बस्ती में न्यायोत्सव विधिक सेवा सप्ताह के अंतर्गत नारायणगढ न्यायालय के न्यायाधीश डालचंद जी, न्यायाधीश श्री सोरभकुमार सिंह जी, अभिभाषक संघ नारायणगढ अध्यक्ष एम सय्यद मंसूरी, नगर पंचायत सीएमओ प्रवीण सेन, वरिष्ठ अधिवक्ता ओमप्रकाश गुप्ता की मौजूदगी में पिपलियामंडी में कानून की जानकारी दी गई। जिससे आम व्यक्ति विधि सहायता जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। बिना पैसे से हर व्यक्ति की मदद होगी। न्यायाधीश ने उपस्थित व्यक्तियों को कानून के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया ओर कैसे हम सावधानी रखें इसके बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर अधिवक्ता निलेश शुक्ला, जैनुल मंसूरी, जतिन परमार मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन एम सय्यद मंसुरी ने किया तथा आभार निलेश शुक्ला ने व्यक्त किया। न्यायोत्सव विधिक सेवा सप्ताह 4-11-24 से प्रारंभ हुआ जो 9-12-234 को को इसका समापन हुआ। विधिक सेवा सप्ताह के अंतर्गत न्यायाधीश श्री डालचंद जी एवं न्यायाधीश श्री सोरभकुमार सिंह जी को मौजूदगी में नारायणगढ कन्या शाला स्कूल में ड्राइंग प्रतियोगिता आयोजित करवाकर स्कूल के विद्यार्थियों को कानून सम्बन्धी जानकारी दी गई। वही लीगल कानून पैनल के अधिवक्ता एम सय्यद मंसुरी, ओमप्रकाश गुप्ता, अरविंद पाटीदार, अजय राणावत, निलेश शुक्ला ने बालागुडा, कनघट्टी, खंखरई में शिविर आयोजित कर विधिक सेवा के बारे में जानकारी दी गई।

पहली बार भाग लेंगे नीमच जिला तैराकी संघ के 4 प्रतियोगी

नीमच। मप्र तैराकी संघ द्वारा भोपाल तैराकी संघ के सहयोग से आगामी 10 से 12 नवंबर तक मास्टर्स नेशनल तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन भोपाल के प्रकाश तरण पुष्कर में आयोजित किया जा रहा है। जिला तैराकी संघ अध्यक्ष अशोक मोदी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में इतिहास में पहली बार नीमच जिला तैराकी संघ की ओर से चार प्रतियोगी भाग ले रहे है। इसमें मयंक राठौर, विशाल शर्मा, राकेश बंसल और धीरेंद्र गेहलोद शामिल है। ये सभी प्रतियोगी 40 एवं 50 वर्ष के ग्रुप में भाग लेंगे। प्रतियोगिता 25 वर्ष से अधिक उम्र के लिए होती है। हर 5 वर्ष की उम्र में ग्रुप होता है।

सांवरिया सेठ और बाबा श्याम की भजन संध्या देर रात तक खूब जमी

नीमच, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। श्री सांवलिया सेठ भक्त मंडल नीमच के तत्वाधान में क्षेत्र की खुशहाली सुख समृद्धि के लिए तृतीय भव्य भजन संध्या में भजन गायक कलाकार अजय शर्मा दोसा जयपुर, ने सांवरिया है सेठ म्हारी राधा जी राधा जी सेठानी है... परमात्मा जिंदगी के साथ भी और जिंदगी के बाद भी साथ में रहता है... तेरे दर पर आके मुझे क्या मिला यह मैं जानता हूं या तू जाने... सुरभि चतुर्वेदी जयपुर ने जिसने जाया उसने पाया तेरा सहारा है अगर तूम मिलने आ जाओ मेरी जिंदगी संवर जाए... रतन राव सिंहाना राजसमंद ने मारे टूटी झोपडी ज़पडिया थारे महल कंचन करोडा का.. तू यार गरीब सुदामा रो.. महारा शिश का दानी नीमच नरेश मन बावडा कलयुगअवतारी...आदि सांवरिया सेठ व बाबा खाटू श्याम पर आधारित अपने करण प्रिय मधुर भजनों की प्रस्तुतियां दी। श्रद्धालु झूम कर मंत्र मुग्ध हो गए। सुर साधक उमेश म्यूजिकल ग्रुप नीमच, शर्मा साउंड पालसोडा अपनी सेवा प्रदान की। इस अवसर पर सांवरिया जी मंदिर नीमच सिटी का फूलों एवं रंग-बिरंगे विद्युत बल्ब की लडियों से आकर्षक श्रृंगार किया गया। भक्ति पंडाल में मेगा स्क्रीन पर भजनों का सीधा प्रसारण प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर बाबा खाटू श्याम की अलौकिक ज्योत में श्रद्धालु भक्तों द्वारा घृत की वेदिक मंत्रों उच्चारण के साथ आहूति देकर आशीर्वाद ग्रहण किया। सांवरिया सेठ जी व बाबा खाटू श्याम का 56भोग व आलोकिक दरबार सेवा उदय नरेश निंबाहेडा द्वारा फूलों से श्रृंगारित किया। श्रद्धालु भक्तों पर इत्र की मधुर सुगंध व ऑटोमेटिक इलेक्ट्रिक ड्रोन द्वारा खुले आसमान से पुष्प वर्षा कर सांवरिया सेठ व बाबा खाटू श्याम के भजनों की अगवानी की गई। मन मोहक ढोल एवं डीजे श्रद्धालु भक्तों के आकर्षण का केंद्र रहें। आरती के बाद प्रसाद वितरण किया गया।

सहस्त्रार्जुन भगवान की जयंती मनाई

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। सर्ववर्गीय कलाल समाज सामाजिक समिति द्वारा अपने आराध्य देव राज राजेश्वर सहस्त्रार्जुन भगवान की पावन जयंती प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी धूमधाम से मनाई गई। जिसमें समाज के महिलाओं एवं बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। बसेर चौक स्थित हॉल में आयोजित कार्यक्रम में समाजजनों ने सहस्त्रार्जुन भगवान के चित्र पर माल्यार्पण किया। तत्पश्चात् पूजा अर्चना कर महाआरती की गई। इस दौरान समाजजनों हेतु अन्नकूट प्रसादी का भी आयोजन किया गया जिसका सभी समाजजनों ने लाभ लिया। कार्यक्रम के दौरान सभी ने भक्ति गीतों एवं भजनों पर नृत्य भी किया। इस अवसर पर कलाल समाज के सभी वरिष्ठजन, पुरुष एवं महिलाओं ने उपस्थित होकर आराध्य देव का आशीर्वाद प्राप्त किया। उक्त जानकारी विकास बसेर ने दी।

मैराथन दौड़ के माध्यम से न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह का समापन

नीमच, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। म.प्र.राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार 04 नवम्बर से 09 नवम्बर तक न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह कार्यक्रम अन्तर्गत विभिन्न विधिक सेवा कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसी श्रृंखला में शनिवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीमच द्वारा विधिक सेवा दिवस के अवसर पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीष श्री वीरेन्द्र सिंह राजपूत के निर्देशानुसार एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती नज़मा बेगम के नेतृत्व में मैराथन दौड का आयोजन किया गया। मैराथन दल को जिला न्यायालय परिसर स्थित ए.डी.आर. सेंटर भवन से रवाना किया गया। मैराथन दौड जिला न्यायालय परिसर से फव्वारा चैक, मैसी शोरूम चैराहा, होते हुये वापस जिला न्यायालय परिसर में समाप्त हुई। मैराथन दौड में पैनल अधिवक्ता, एलएडीसीएस के अधिकारीगण, पैरालीगल वालेंटियर्स एवं जिला न्यायालय एवं कार्यालयीन अधिकारी, कर्मचारीगण उपस्थित थे।

राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका श्रीमती कीर्ति सक्सेना का जिला शिक्षा अधिकारी ने किया सम्मान

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 2 की शिक्षिका श्रीमती कीर्ति सक्सेना को राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त होने पर मंदसौर जिले का नाम गौरवान्वित करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय मंदसौर में जिला शिक्षा अधिकारी श्री लोकेंद्र डाबी ने श्रीमती सक्सेना का सम्मान किया इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी ने आपको आदर्श शिक्षक बताते हुए अन्य शिक्षकों से भी अपील की है कि आप भी शिक्षा के क्षेत्र में मंदसौर जिले को प्रदेश का आदर्श जिला स्थापित करने में सहयोग प्रदान करें। आप सभी शिक्षक सम्मान के पात्र हैं। शिक्षक के द्वारा प्राचीनकाल से ही राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कार्यक्रम के दौरान सहायक संचालक श्रीमती टैरेसा मिंज, विकासखंड शिक्षा अधिकारी श्री आनंद डाबर, श्री धर्मपाल सिंह देवडा प्राचार्य, श्री सुदीप दास प्राचार्य, श्री दिलीपसिंह डाबी प्राचार्य, प्राचार्य श्री राजेश मिश्रा, जिला परियोजना समन्वय कार्यालय से श्री भगवती शर्मा, राज्य शिक्षक संघ के श्री दिनेश शुक्ला, श्री चंद्र विनोद सेंगर श्री राकेश पुरोहित श्री अशोक शर्मा राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक, श्री जयेश नागर, श्री लक्ष्मी नारायण पाटीदार, श्री सुनिल धनोतिया, श्री हरि सिंह राठौड, सुरेंद्र भावसार, नयन परमार, सुश्री सलमा शाह सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।।

सभी ने अपने विचार व्यक्त किए तथा श्रीमती कीर्ति सक्सेना मैडम को शुभकामनाएं एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए बधाई प्रेषित करते हुए मंदसौर जिले का नाम तथा शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार करने तथा सहयोग करने की अपील भी की श्रीमती सक्सेना मैडम ने भी आश्वासन दिया है कि वह सदैव शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका निभाती रहेगी तथा शिक्षा विभाग एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त होने वाले सभी आदेशों का क्रियान्वयन करने में नवाचार करने में पठन-पाठन में सहयोग प्रदान करेगी आपने यह भी कहा कि यह पुरस्कार मेरा नहीं है यह उन सभी छात्र-छात्राओं का है जिन्होंने उनके नवाचार का लाभ उठाकर उनके कार्यों को सफलता प्रदान की। श्रीमती कीर्ति सक्सेना ने समस्त मार्गदर्शी, प्रेरणादायी शिक्षकों और परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राहुल शर्मा ने किया आभार श्री महेश गर्ग ने माना।

आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु शिविर लगाया

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। क्षेत्रीय पार्षद व नपा पीडब्ल्यूडी सभापति श्रीमती निर्मला चंदवानी व शा. महाविद्यालय जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री नरेश चंदवानी की पहल पर वार्ड नं. 6 के दशरथ नगर कार्नर स्थित गोदीपंति बालाजी मंदिर परिसर में 70 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धजनों को आयुष्मान योजना का लाभ दिलाने हेतु शिविर लगाया गया है। शिविर में 70 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्गों को नि:शुल्क 5 लाख रू. तक के इलाज की सुविधा मिले इसके लिये यह शिविर लगाया गया है। 8 व 9 नवम्बर को सैकड़ों की संख्या में वृद्धजनों ने अपने परिवारजनों के साथ पहुंचकर आयुष्मान कार्ड बनवाये।

जिले में जल चौपाल में 386 जल संरक्षण के कार्य चिन्हित

अब तक 102 ग्राम पंचायतों में जल चौपाल सम्पन्न, जिले में 41 गांवों में बोरी बंधान के कार्य किए

नीमच, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। जल शक्ति अभियान के तहत जिले में कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा के मार्गदर्शन में 6 नवम्बर से 17 नवम्बर 2024 तक सभी 243 ग्राम पंचायतों में जल चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। अब तक जिले में 102 ग्राम पंचायतों में जल चौपाल नोडल अधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित की जाकर कुल 386 जल संरचनाओं के निर्माण के कार्य चयनित किए गये है।

जिला पंचायत सीईओ श्री अरविंद डामोर ने बताया कि जनपद क्षेत्र जावद में 39, मनासा में 30 एवं नीमच क्षेत्र में 33 जल चौपाल आयोजित की जा चुकी है। इन जल चौपाल में जावद क्षेत्र में 240, मनासा में 113 एवं नीमच 33 इस तरह कुल 386 जल संरचनाओं के कार्य ग्रामीणों से चर्चा कर चिन्हित किये गये है। साथ ही 41 बोरी बंधान के कार्य भी करवाए गये है। जल चौपाल में चयनित जल संरचनाओं में प्राचीन बावडी मरम्मत के 10 कार्य, चेक डेम स्टॉप डेम के 22 कार्य, बोरी बंधान के 41 कार्य, खेततालाब के 22 कार्य, कपिलधाराकूप के 49, रूफटाप, रेनवाटर हार्वेस्टिंग के 41 कार्य, कंटूर ट्रेन्चा के 2 कार्य, नई तलाई व तालाब निर्माण के 14 कार्य, गाद (मिट्टी) निकालने के 17 कार्य, परकोलेशक टैंक के 22 कार्य, रिचार्ज पिट 60 कार्य, नदी पूर्नजीवन के 17 कार्य, चारागाह के 2 कार्य चयनित किए गये है।

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना की अंतिम तारीख आज

नीमच, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना द्वारा भारत की शीर्ष 500 कंपनियों में इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करने हेतु 'प्रधानमंत्री इंटर्नशिप 'योजना प्रारंभ की गई है। इस योजना में युवाओं को रोजगारपूरक व्यावहारिक कौशल एवं कार्यानुभव प्राप्त होगा। साथ ही, इंटर्नशिप के दौरान उद्योग-उन्मुखी प्रशिक्षण, नवीनतम तकनीक एवं प्रक्रिया के माध्यम से प्रशिक्षण एवं नियमित रोजगार प्राप्त करने की योग्यता अर्जित करने का अवसर प्राप्त होगा।

आवेदक जिनकी आयु 21 से 24 वर्ष के मध्य हो, शैक्षणिक योग्यता 10वीं/आईटीआई या उससे अधिक (प्रत्येक इंटर्नशिप की वांछित योग्यता अनुसार) हो तथा वे नियमित पूर्णकालिक रोजगार एवं शिक्षा में न हों, पात्र होंगे। इंटर्नशिप के दौरान युवाओं को प्रतिमाह 5000 रुपये स्टाइपेंड एवं इंटर्नशिप पूर्ण होने उपरांत एकमुश्त राशि 6000 रुपये प्राप्त होगी। इस इंटर्नशिप की अवधि 12 माह की होगी। आवेदन करने की अंतिम तिथि, दिनांक 10 नवंबर 2024 तक है। आवेदक पंजीयन लिंक https://pminternship.mca.gov.in पर कर सकते हैं। योजना के संबंध में अधिक जानकारी हेतु टोल फ्री नंबर 18001116090 पर कॉल करें।

मंदसौर विधानसभा की पांच पंचायतों में बनेंगे नवीन पंचायत भवन-विधायक

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। विधानसभा क्षेत्र मंदसौर के

अंतर्गत नवगठित पांच पंचायतो में गुराडिया लालमुहा, भूकी, हैदरवास, पिपलखेडी ,दमदम मे नवीन पंचायत भवनो का निर्माण होगों ज्ञात हो कि मंदसौर विधानसभा में विगत समय पांच नई ग्राम पंचायतो पंचायतो का गठन हुआ था परंतु पंचायत भवन नहीं होने से कार्यालयीन कार्य करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड रहा था ग्रामीणों द्वारा भी लगातार पंचायत भवनों की स्वीकृतियों की मांग की जा रही थी उक्त आशय से क्षेत्रीय विधायक विपिन जैन द्वारा लगातार पत्राचार के माध्यम से नवीन पंचायत भवनो की स्वीकृतियों की मांग की जा रही थी उक्त ग्राम पंचायत में नवीन पंचायत भवन की स्वीकृतियां प्राप्त होने पर क्षेत्रीय विधायक विपिन जैन द्वारा प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव,उप मुख्यमंत्री जगदीश देवडा और पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल को धन्यवाद ज्ञापित कर आभार व्यक्त किया गया है।

मुख्यमंत्री द्वारा लाड़ली बहनों के खाते में राशि अंतरित

सामाजिक सुरक्षा पेंशन के 55 लाख हितग्राहियों को 333.32 करोड़ की राशि का भुगतान, नीमच जिले की 1.60 लाख से अधिक बहनों के खाते में 19.51 करोड़ की राशि अंतरित

नीमच, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने शनिवार को इंदौर में मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना के तहत आयोजित कार्यक्रम में नवम्बर माह की किश्त के रूप में प्रति बहना 1250 रूपये के मान से कुल 1573 करोड रूपये की राशि का सिंगल क्लिक के माध्यम से बहनों के खाते में अंतरण किया। मुख्यमंत्री ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत प्रदेश के 55 लाख हितग्राहियों के खाते में 333.32 करोड की सहायता राशि भी अंतरित की। नीमच जिले की एक लाख 60 हजार 776 बहनों के खाते में 1250 रूपये के मान से अक्टूबर पेड इन नवम्बर माह की किश्त के रूप में कुल 19 करोड 51 लाख रूपये की राशि भी सिंगल क्लिक के माध्यम से अंतरित की गई।

मुख्यमंत्री ने 450 रूपये गैस रिफिलिंग योजना के तहत 26 लाख बहनों के खातें में 55 करोड की राशि भी सिंगल क्लिक के माध्यम से अंतरित की। इस अवसर पर केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर, प्रदेश के मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट महापोर श्री पुश्य मित्र भार्गव अभिनेत्री सुश्री जयाप्रदा एवं श्री अंतरसिह दरबार तथा जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे। इंदौर के नेहरू स्टेडियम से इस कार्यक्रम का वेब कास्टिंग के जरिए सभी जिलों में सीधा प्रसारण भी किया गया। नीमच के एनआईसी कक्ष में कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा, जिला पंचायत सीईओ श्री अरविंद डामोर, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी श्री टी.सी.मेहरा एवं लाडली बहना योजना एवं सामाजिक सुरक्षा पेंशन के हितग्राही भी उपस्थित थे। इस मौके पर सुश्री मुस्कान भारती, श्री कमल यादव एवं श्री मानसिह यादव के नेतृत्वा में पांच हजार से अधिक बालिकाओं के वृहद दल ने तलवारबाजी की कला का शौर्य प्रदर्शन भी किया। मुख्यमंत्री ने तलवारबाजी का शौर्य प्रदर्शन करने वाले आयोजकों को मुख्यममंत्री स्वैच्छानुदान से 5 लाख रूपये की सहायता राशि प्रदान करने की घोषणा भी की। प्रारंभ में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दीप प्रज्वलित कर, कार्यक्रम का शुभारंभ किया तथा पुष्पवर्षा कर उपस्थित लाडली बहनों का स्वागत अभिनंदन किया।

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर में आनंद सभा का आयोजन

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर की व्यक्तित्व विकास कक्षा में डॉ वीणा सिंह द्वारा, आज 09.11.24को आनंद सभा का आयोजन हुआ बी. ए. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों से चर्चा करते हुए मदद, पीयर प्रेशर, स्वीकार्यता, अपनी गड़बड़ और जीवन की नदी के पत्थरों को देखना और निकालना अपनी स्वॉट एनालिसिस करना, सकारात्मकता बढाना, जीवन के लक्ष्यों पर आनंदित होकर ध्यान केंद्रित करना आदि विषयों पर चर्चा की। सर्वप्रथम छात्रा हिमांशी हाडा ने प्रार्थना प्रस्तुत की।

तत्पश्चात मास्टर ट्रेनर एवं व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ संयोजक डॉ वीणा सिंह ने मदद एवं स्वीकार्यता के भाव पर बात की जहां पर अपनी मानसिक, शारीरिक, पारिवारिक और सामाजिक स्थिति को समझकर ,स्वीकार करके किस प्रकार पीयर प्रेशर को हैंडल किया जा सकता ,है इस पर बात करते हुए कृतज्ञता के भाव पर अपनी बात का समापन किया। उन्होंने यह भी बताया की कुछ भी बोलने और करने से पहले छोटा सा समय विराम लेकर किस प्रकार गलत परिस्थितियों को टाला जा सकता है और प्रतिदिन का अल्पविराम लेने की आदत का यदि अभ्यास किया जाए तो जीवन आनंद की ओर बढने लगेगा। परमात्मा माता पिता एवं गुरु के प्रति सदैव मन में कृ तज्ञता का भाव रखना चाहिए। तत्पश्चात उन्होंने सकारात्मकता को बढ़ाकर अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने की कला को प्रतिदिन अल्पविराम लेकर किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है इस विषय पर बातचीत की। उन्होंने समझाया कि यदि अपनी खूबियां पता हो तो कार्य को बहुत अच्छे से संपन्न किया जा सकता है और यदि अपनी खामियां पता हो तो उन्हें हटाकर अपने अंदर की गड़बड़ को दूर करके आनंद के मार्ग पर निरंतर चला जा सकता है। अंत में बच्चों के साथ मिलकर दुनिया की हालत है बेकार सभी की है यही फरियाद और हम आपसे पूछते हैं कौन है जिम्मेदार गीत गाया लगभग 80 बच्चों ने आनंद सभा का लाभ लिया । कई विद्यार्थियों ने मदद एवं आभार के भाव पर अपने विचार व्यक्त किए

मोबाइल चलाने पर पुत्री को डांटा तो रिश्तेदारों ने पीटा

पिपलियामंडी, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। मोबाइल चलाने पर बेटी को डांटा तो रिश्तेदारों ने पीटा, पुलिस ने तीन के खिलाफ केस दर्ज किया। कनघट्टी नई आबादी निवासी कमलेश मेहतर ने पिपलियामंडी थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि मैंने बेटी आशा को मोबाइल चलाने के डांटा तो मेरे साडू बबलू पिता बंशीलाल, साले रामचरण पिता जगदीश व रामचरण के भतीजे रिक्की पिता सुरेश ने मुझसे गाली-गलौज की व कहा कि तूने आशा को क्यों डांटा। तीनों ने मुझे लकडियों से मारा, जिससे सिर में चोंट आई और मैं बेहोश हो गया था, मुझे मंदसौर जिला अस्पताल भर्ती कराया था, मैंने अपना इलाज कराया, उसके बाद पिपलिया थाने पर शिकायत दर्ज करने पहुंचा हूं। पुलिस ने तीनों आरोपियों पर केस दर्ज किया।

थार ने मारी कार को टक्कर

पिपलियामंडी, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। थार जीप ने कार को टक्कर मार दी। पुलिस ने केस दर्ज किया।। खरसोदकला (भाटपचलाना, उज्जैन) निवासी प्रदीप पिता दयाराम पाटीदार ने मल्हारगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई सांवलियाजी दर्शन के लिए जा रहे थे, मल्हारगढ बस स्टेण्ड पर ब्रेकर के यहां कार को धीरे किया, इसी दौरान पीछे से आ रही थार जीप (एमपी 12 जेडएन 0734) के ड्राइवर ने तेज व लापरवाहीपूर्वक चलाकर पीछे से टक्कर मार दी, जिससे कार क्षतिग्रस्त हो गई। थार ड्राइवर ने कार सही कराने की बोला, लेकिन सही नही कराई। पुलिस ने केस दर्ज किया।

जिला न्यायालय परिसर में न्यायोत्सव सम्पन्न

विधिक सेवा सप्ताह का समापन समारोह एवं पुरूस्कार वितरण किया गया

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर द्वारा प्रसारित दिशानिर्देश अनुसार दिनांक 04.11.2024 से 09.11.2024 तक मनाये जा रहे न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह के अंतिम दिवस विधिक सेवा दिवस-09 नवंबर के अवसर परं न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह का समापन समारोह का दिनांक 09 नवंबर, 2024 को सांय 05:00 बजे से आयोजन हुआ। समापन समारोह के साथ ही उक्त सप्ताह अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरूस्कृत करने हेतु पुरूस्कार वितरण समारोह का भी आयोजन सम्पन्न हुआ।

जिला न्यायालय परिसर, मंदसौर में आयोजित उक्त समारोह में मंचासीन माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री कपिल मेहता, विशेष न्यायाधीश (एट्रोसिटीज) श्री अजय कुमार सिंह, जिला अभिभाषक संघ मंदसौर के अध्यक्ष श्री रघुवीर सिंह पंवार एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मंदसौर के सचिव व जिला न्यायाधीश श्री सिद्धार्थ तिवारी ने, न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह अन्तर्गत आयोजित मैराथन दौड के विजेताओं को तथा उक्त सप्ताह अन्तर्गत स्कूलों में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा: चित्रकला प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने विजेताओं को शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर माननीय प्रधान जिला न्यायाधीश श्रीमान कपिल मेहता सभा को सम्बोधित करते हुये व्यक्त किया किया कि जिला प्राधिकरण द्वारा न्यायोत्सव सप्ताह अन्तर्गत सम्पादित की गई विभिन्न गतिविधियों से आमजन में अवश्य ही विधिक सेवाओं के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

कार्यक्रम को विशेष न्यायाधीश श्री अजय कुमार सिंह तथा जिला अभिभाषक संघ के अध्यक्ष श्री रघुवीर सिंह पंवार ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में आभार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मंदसौर के सचिव व जिला न्यायाधीश श्री सिद्धार्थ तिवारी द्वारा व्यक्त किया गया तथा कार्यक्रम का संचालन जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री प्रवीण कुमार द्वारा किया गया। इस अवसर जिला स्थापना के जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश डॉ प्रीति श्रीवास्तव, सुश्री प्रतिष्ठा अवस्थी, श्री आसिफ अब्दूल्लाह, श्रीमती शिल्पा तिवारी, श्री विशाल शर्मा, श्री विवेक बुखारिया, श्री मुनेन्द्र सिंह वर्मा व मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री प्रवीण कुमार सौंधिया, न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री प्रेमदीप सांकला, श्रीमती रोहिणी तिवारी, श्री विनोद अहिरवार, श्री राजकुमार त्रिपाठी, सुश्री निकिता वार्ष्णेय, श्रीमती प्राची पाण्ड्य माटा, सुश्री श्वेता सिंह, सुश्री रूपा मिश्रा, सुश्री पूर्वी गुप्ता, श्री काशीष माटा, श्रम न्यायालय के पीठासीन अधिकारी श्री जय पाटीदार, लीगल एड डिफेंस कांउंसल्स के चीफ श्री प्रमोद मेनारिया सहित अन्य लीगल एड डिफेंस कांउसल्स, अभिभाषक संघ के पदाधिकारीगण एवं अधिवक्तागण, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मंदसौर से सम्बद्ध पैरालीगल वालेन्टियर्स आदि दर्शकदीर्घा में आसीन रहे।

प्रदर्शनी का भी हुआ आयोजन- इससे पूर्व विधिक सेवा दिवस के अवसर 09 नवम्बर, 2024 को प्रात: 10:15 बजे प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश महोदय श्री कपिल मेहता द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मंदसौर द्वारा जिला न्यायालय परिसर में लगाई गई प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया। पदर्शनी में विधिक सेवा योजनाओं का बेनर, पेम्पलेट, चित्रकला प्रतियोगिता में प्रतिभागीगण द्वारा बनाई गई पेन्टिग्स को भी प्रदर्शित किया गया।

अवैध शराब सहित 4 को पकड़ा

पिपलियामंडी, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। पुलिस ने अवैध शराब सहित 4 आरोपियों को पकडा। नाहरगढ पुलिस ने 10-10 लीटर हाथ भट्टी कच्ची शराब के साथ क्रमश: निरधारी निवासी ममता पति सिकन्दर, गारियाखेडा निवासी कलाबाई पति राजेन्द व शक्करखेडी निवासी विजय पिता जगदीश को, 20 क्वार्टर के साथ एरा निवासी जसवंतसिंह पिता मदनसिंह को पकडा। आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट में केस दर्ज किया।

विधिक सेवा सप्ताह अन्तर्गत मैराथन सम्पन्न

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। माननीय मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर द्वारा प्रसारित दिशानिर्देश अनुसार न्यायोत्सव: विधिक सेवा सप्ताह के अंतिम दिवस विधिक सेवा दिवस-09 नवंबर के अवसर परं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मंदसौर के तत्वाधान में माननीय प्रधान जिला न्यायाधीश श्री कपिल मेहता के मार्गदर्शन तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मंदसौर के सचिव एवं जिला न्यायाधीश श्री सिद्धार्थ तिवारी के निर्देशन में मैराथन दौड का आयोजन प्रात: 08:00 बजे से आयोजित हुई। उक्त मैराथन दौड का आरंभ माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री कपिल मेहता द्वारा हरी झण्डी दिखाकर किया गया। जिला न्यायालय, मंदसौर के सभी न्यायाधीशगण, जिला अभिभाषक संघ के अध्यक्ष श्री रघुवीर सिंह पंवार सहित अधिवक्तागण, खेल प्रशिक्षकगण, शहर के गणमान्य नागरिक की मौजूदगी में मैराथन प्रारंभ हुई। उक्त मैराथन दौड जिला न्यायालय परिसर सें प्रारंभ होकर किला रोड से अम्बेडकर चौराहा एवं पुलिस पैट्रोल पम्प होते हुये शासकीय उत्कृष्टविद्यालय के खेल मैदान पर नियत किये गए समापन स्थल पर पहुँचकर सम्पन्न हुई।

विरेन्द्र डांगी तथा हंसा बघनी ने प्राप्त किया प्रथम स्थान- विधिक जागरूकता के दैश्य से आयोजित उक्त मैराथन दौड में शासकीय एवं निजी विद्यालय एवं महाविद्यालय के विद्यार्थिगण, खिलाड़ियों एवं खेलप्रेमियों, न्यायाधीशगण, न्यायालयीन कर्मचारीगण, पुलिसकर्मी, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मंदसौर सम्बद्ध पेनल अधिवक्तागण एवं पैरालीगल वालेन्टियर्स तथा नगर के गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। मैराथन में पुरूष वर्ग में विरेन्द्र डांगी तथा महिला वर्ग में हंसा बंधनी ने प्राप्त किया प्रथम स्थान किया।

शोधार्थी पीएचडी शोध छात्रवृत्ति के लिए 18 तक कर सकेंगे आवेदन

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। उच्च शिक्षा विभाग ने सत्र 2024-25 के लिए विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति/जनजाति एवं दिव्यांग श्रेणी (सभी वर्ग) के शोधार्थियों को पीएचडी शोध छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए हैं। इसके अनुसार सत्र 2024-25 के लिए अनुसूचित जाति/जनजाति एवं दिव्यांग (दिव्यांग श्रेणी के सामान्य/पिछडा वर्ग / अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति) के शोधार्थी, पीएचडी शोध छात्रवृत्ति के लिए 18 नवंबर 2024 तक आवेदन पत्र जमा कर सकेंगे। उक्त शोधार्थियों को अपना आवेदन पत्र, संस्था/शोध केन्द्र से अग्रेषित कराकर कार्यालय आयुक्त, उच्च शिक्षा, तृतीय तल सतपुडा भवन, भोपाल में 18 नवंबर तक जमा करना/भेजना होगा। इस संबंध में विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र उच्च शिक्षा विभाग की वेबसाईट www.higheredu cation.mp.gov.in पर नवीन निर्देश के अंतर्गत उपलब्ध है, जो अनुसूचित जाति/जनजाति एवं दिव्यांग (दिव्यांग श्रेणी के सामान्य/पिछडा वर्ग/ अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति) के शोधार्थियों को पीएच.डी. शोध छात्रवृत्ति हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित करने के बावत' शीर्षक पर अंकित है।

युवतियों के लिए प्रशिक्षण 15 से प्रारम्भ

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, सर्किट हाउस से पहले, नई आबादी थाने के पास, दलोदा रोड मन्दसौर द्वारा 15 नवम्बर 2024 से महिला सिलाई, ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण प्रारंभ होगा।

इस प्रशिक्षण का लाभ गामीण अंचल की युवतियां जिनकी आयु 18 से 45 वर्ष के बीच हो को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस 30 दिवसीय प्रशिक्षण मे आवास, भोजन व नाश्ते की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। बैंकिग संबंधी सभी जानकारियां दी जायेगी।प्रशिक्षणार्थी को 4 नये पासपोर्ट साईज फोटो, आधार कार्ड, बैंक पासबुक, एवं राशन कार्ड की छायाप्रति के साथ आवेदन सेन्ट्रल बैंक ऑफइंडिया, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, सर्किट हाउस से पहले, नई आबादी थाने के पास, मन्दसौर मे जमा करा सकते है। उक्त प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठावे । संस्थान मे संपर्क सुबह 10:00 से शाम 5:30 बजे तक मोबाईल न. 7999852839, 8435806297,9111858590, 9589720982, 8619685744 पर भी जानकारी प्राप्त कर सकते है।

संगठन पर्व 2024 अंतर्गत भाजपा धुंधड़का मंडल की कार्यशाला संपन्न

मंदसौर, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश भाजपा संगठन के मंशानुरूप मंदसौर जिले के प्रत्येक मंडल में संगठन पर्व 2024 अंतर्गत संगठनात्मक चुनाव के दृष्टिकोण से कार्यशालाएं सभी मंडल में निरंतर जारी है। इसी क्रम में आज जिला भारतीय जनता पार्टी शीर्ष नेतृत्व के निर्देशानुसार संगठन पर्व के अंतर्गत भारतीय जनता पार्टी धुंधडका मंडल की कार्यशाला मंडल मुख्यालय स्थित खेडापति बालाजी मंदिर धुधंडका पर भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटोलिया, संगठन पर्व मंडल चुनाव सहयोगी पारस मावर, मंडल प्रभारी एंव अनुसूचित जाति मोर्चा जिलाध्यक्ष अशोक सूर्यवंशी के मुख्य आथित्य में सम्पन्न हुई। बैठक का शुभारंभ पं.दीनदयाल उपाध्याय एंव डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। तत् पश्चात मंचस्थ अतिथि गणों का स्वागत मंडल पदाधिकारियों द्वारा किया गया। स्वागत भाषण मंडल अध्यक्ष जीवन शर्मा ने दिया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटोलिया ने कहा की भाजपा का इतिहास सिर्फ़ एक पार्टी का इतिहास नहीं है वरन यह भारत की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं और विकास की यात्रा का प्रतीक है, भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता ने राष्ट्र सेवा का सपना देखा और उसे साकार भी किया। हमें गर्व है कि हमने जन-जन की आवाज़ को राजनीतिक मंच पर सम्मान दिया है और समाज के हर वर्ग के विकास के लिए कार्य किया है। भाजपा में संगठन का विशेष स्थान है। हमारा विश्वास है कि यदि संगठन मजबूत होगा, तो हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं। संगठन पर्व का उद्देश्य हमारी एकजुटता को और भी सुदृढ़ करना है। आप सभी कार्यकर्ता हमारी पार्टी की रीढ़ हैं। आपकी निष्ठा, आपका समर्पण और आपकी मेहनत ही भाजपा को आम जनता के दिलों में जगह देती है। हमारे प्रत्येक कार्यकर्ता का योगदान महत्वपूर्ण है, चाहे वह गांव में हो या शहर में, बूथ पर हो या जिला स्तर पर। इस संगठन पर्व अंतर्गत हमें ऐसे कार्यकर्ताओं का चयन सर्वानुमति से करना है जो समयदान कर पार्टी को बूथ स्तर तक मजबूती प्रदान करें। कार्यशाला को संबोधित करते हुए संगठन चुनाव मंडल सहयोगी पारस मावर ने कहा की आपके मंडल के प्रत्येक शक्ति केन्द्र की आगामी 12, 13, 14 नवंबर को कार्यशाला संपन्न हो जाए एंव 14 से 20 नवंबर के बीच प्रत्येक बूथ की 11 सदस्यीय बूथ समिति का गठन हो जिसमें 3 महिलाएं, एक मन की बात प्रभारी, एक लाभार्थी प्रभारी, एक सोशल मीडिया प्रभारी सहित बूथ पर अध्यक्ष, महामंत्री एवं बी.एल.ए.2 बनाया जाए, जिसमें सामाजिक समरसता का विशेष रूप से ध्यान रखा जाए। संगठनात्मक चुनाव में आपसी समन्वय से निर्णय किया जावे। कार्यशाला को मंडल प्रभारी एंव अजा मोर्चा जिलाध्यक्ष अशोक सूर्यवंशी ने वर्तमान समय में भारत के विकास पथ पर कई चुनौतियां और अवसर हमारे सामने हैं। विपक्षी दल हमें रोकने के हर संभव प्रयास कर रहे हैं, लेकिन हमने अपने सभी कार्यकर्ता के दम पर विपक्षीय दल को पटखनी दी है। हमारा संगठन पर्व का यह अवसर हमें अपनी योजनाओं को और भी प्रभावी ढंग से लागू करने का संकल्प देता है। कार्यशाला में स्वागत भाषण देते हुए भाजपा मंडल अध्यक्ष जीवन शर्मा ने मंडल की संरचना से अवगत कराते हुए मंचस्थ अतिथि गणों को बताया कि हमारे धुंधडका मंडल में 10 शक्ति केन्द्र है और आगामी संगठन कार्यो हेतु हमने प्रत्येक शक्ति केन्द्र पर मंडल से बाहर निवास करने वाले वरिष्ठपदाधिकारियों को शक्ति केन्द्र चुनाव सहयोगी बना कर भेजा गया है। हम आपको विश्वास दिलाते है की हमारे मंडल में हम बेहतर तालमेल के साथ बूथ इकाई और मंडल इकाई का गठन करने में सफल होगें। कार्यशाला में वरिष्ठनेता हरिसिंह चावडा, भाजपा मंडल महामंत्री देवीलाल सिसोदिया का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस अवसर पर कार्यशाला मे मंडल में निवासरत जिला पदाधिकारी, जिला कार्यसमिति सदस्य, मंडल पदाधिकारीगण, समस्त मोर्चा व प्रकोष्ठजिला व मंडल पदाधिकारी, शक्ति केंद्र प्रभारी, संयोजकगण उपस्थित थे।

शराब दुकान सेल्समेन को पीटा, 3 पर केस दर्ज

पिपलियामंडी, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। शराब के लिए रुपए मांगे तो सेल्समेन को पीटा। पुलिस ने तीन आरोपियों पर केस दर्ज किया। निरधारी निवासी विशाल पिता महेन्द्रसिंह चौहान ने नाहरगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि मैं शासकीय शराब दुकान नाहरगढ पर सेल्समेन हूं, रात्रि में नई आबादी नाहरगढ निवासी सद्धाम हुसेन, आसीफ मेवाती व बबलू खारोल बीयर व शराब लेने आए मैंने रुपए मांगे, तीनों ने रुपए देने से इंकार कर दिया और गाली-गलौज कर मारपीट की। और धमकी दी की हमें रोज फ्री में दारु देना पडेगी, नही तो दुकान नही चलने देंगे। पुलिस ने तीनों आरोपियों पर केस दर्ज किया।

स्टेशन बालाजी पर अन्नकूट आज

पिपलियामंडी, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। स्टेशन बालाजी मंदिर पर 10 नवम्बर को अन्नकूट वितरण होगा। मंदिर समिति अध्यक्ष हरिनंदन बोराना ने बताया दोपहर 12 बजे आरती होगी। पश्चात 1 बजे अन्नकूट प्रसाद का वितरण किया जाएगा।

आयुर्वेदिक स्वास्थ्य शिविर सम्पन्न

नीमच, 09 नवम्बर गुरु एक्सप्रेस। संचालनालय आयुष भोपाल के पत्रानुसार एवं जिला आयुष अधिकारी नीमच के मार्गदर्शन शनिवार को आयुष्मान आरोग्य मंदिर जमुनिया कला द्वारा जमुनिया कला में नि:शुल्क आयुर्वेद स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। शिविर में आमवात,संधिवात,उच्च रक्तचाप,उदर रोग,अतिसार, अरुचि, गैस बनना, रक्ताल्पता, कास, श्वास ,स्त्री रोग एवं अन्य मौसमी बीमारियों की नि:शुल्क जांच कर औषधियां प्रदान की गई। शिविर में आए हुए रोगियों का ब्लड प्रेशर ,शुगर, एवं हीमोग्लोबिन आदि की निशुल्क जांच की गई। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत नीमच श्री अरविंद डामोर ने शिविर का निरीक्षण किया। शिविर में जिला आयुष अधिकारी डॉ.आशीष बोरना, ग्राम सरपंच श्री विनोद जायसवाल,भी उपस्थित थे। शिविर में डॉ.बादर सिंह वास्केल, डॉ. पंकज कुमार पाटीदार,डॉ.विमला पाटीदार, श्री कानसिंह राणावत,श्रीमती रितिका तिवारी,श्री हरीश दास बैरागी,श्री विनीत सोनी आदि आयुष स्टाफ द्वारा सेवाएं दी गई । शिविर में कुल 187 रोगियों ने स्वास्थ्य लाभ लिया। शिविर में आमजनों को योगाभ्यास भी कराया गया।

आवश्यकता है

दैनिक **गुरु एक्सप्रेस**

की प्रिंटिंग यूनिट पर रात्रि के समय 11 से 3 बजे तक काम करने वाले युवक (हेल्पर) की आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार (मंदसौर निवासी ही सम्पर्क करें)

संपर्क

संपर्क समय- शाम 4 से 6 बजे तक

कार्यालय दैनिक गुरु एक्सप्रेस

9425105928. 8319964648

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in